Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हिंदी

कक्षा VI

केरल सरकार

शिक्षा विभाग

2016

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
केरल, तिरुवनंतपुरम

KT 33-1/Hindi - 6

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

राष्ट्रगीत

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंगा
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय, जय हे।

प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है। हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है। इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है। हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे। हम अपने माता-पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का आदर करेंगे और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे। हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।

Prepared by :
State Council of Educational Research and Training (SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala

Website : www.scertkerala.gov.in
e-mail : scertkerala@gmail.com
Phone : 0471 - 2341883, Fax : 0471 - 2341869
First Edition : 2015, Reprint : 2016
Printed at : KBPS, Kakkanad, Kochi-30
© Department of Education, Government of Kerala

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्यारे बच्चो,

अब आपके हाथ में हिंदी की नई पाठ्यपुस्तक है। इसमें आपके पसंद की साहित्यिक विधाएँ-कहानियाँ, कविताएँ, समाचार, संस्मरणात्मक लेख आदि सम्मिलित हैं, इन्हीं के साथ दैनिक व्यवहार में आनेवाली कुछ व्यावहारिक विधाएँ भी हैं। इनमें से गुज़रकर हिंदी भाषा और साहित्य के बुनियादी अंशों को समझने की भरसक कोशिश करें। इकाइयों में जीवनमूल्यों का प्रतिफलन आप ज़रूर पाएँगे। उन्हें भी अपनाने का प्रयास करें।

इसी आशा के साथ,

डॉ.पी.ए.फात्तिमा,

निदेशक,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

HINDI

CLASS 6

TEXTBOOK DEVELOPMENT TEAM

SIVAPRASAD M R	Trainer, BRC Palakkad
ANILKUMAR N S	GHSS Muthuvallur, Malappuram
SREEKUMAR S	GUPS Ayalur, Nenmara, Palakkad.
MANOJ KUMAR P	GHSS Anamangad, Malappuram
Dr. J HARIKUMAR	GHSS Bhoothakkulam, Kollam
PREETHA KAMATH K P	GUPS for Girls, Ernakulam
RAMAKRISHNAN P V	AUPS Mundakkara, Kozhikode
ABDUL MAJEED K K	PTMHSS Thazhakode, Malappuram
HAROON SAYED M	NNNMUPS Karalmanna, Palakkad

EXPERTS

Dr. H. PARAMESWARAN
Prof. M. JANARDHANAN PILLAI
Dr. N SURESH
Dr. B. ASOK

ARTISTS

BAIJUDEV C. RAJENDRAN K. SHAJI BABU

ACADEMIC CO-ORDINATOR

Dr. REKHA R NAIR

Research Officer, SCERT

STATE COUNCIL OF EDUCATIONAL
RESEARCH AND TRAINING - Kerala
Thiruvananthapuram

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्यापकों से

छठी कक्षा के छात्र हिंदी शिक्षण के दूसरे दौर पर हैं। पाँचवीं कक्षा में छात्रों ने भाषा के कुछ बुनियादी रूपों का परिचय पाया है। अब साहित्य की कुछ प्रामाणिक विधाओं का परिचय कराना है। बच्चों की आयु तथा अनुभव के अनुकूल पाठ्य सामग्रियों का चयन किया गया है। बच्चों के बौद्धिक, मानसिक स्तर एवं ग्रहण क्षमता को दृष्टि में रखकर प्रक्रियाबद्ध करने के प्रयास के साथ-साथ उनके नैतिक मूल्यों को जागृत करने की भी संचेतना है। इकाइयों में प्रेरक, रोचक, ज्ञान वर्धक पाठों को संकलित किया गया है। हिंदी भाषा की बनावट, व्याकरण ज्ञान के साथ सरल, सरस प्रयोगों के समावेश से अधिक आकर्षक तथा प्रभावशाली बनाने की कोशिश की है। प्रत्येक इकाई के अंत में अधिगम उपलब्धियाँ दी गई हैं। आप पहले ही उससे परिचय पा लें, और छात्रों के स्तरानुकूल प्रक्रियाएँ तैयार करें। विश्लेषणात्मक प्रश्नों का सम्यक उपयोग आशय ग्रहण में अधिक सहायक बन जाएगा। व्याकरण शिक्षण के लिए नमूने की कुछ प्रक्रियाएँ ही दी गई हैं। उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यक प्रक्रियाएँ तैयार करें। आशा है कि हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रति रुचि पैदा करने में यह पुस्तक मदद करेगी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पन्ने पलटने पर...

इकाई 1

बादल दानी	बालगीत
बारिश कैसे मिली	चित्र कहानी

इकाई 2

भारत देश हमारा	लेख
जगमग तारा	कविता
हे मेरे वतन के लोगो	देशभक्ति गान

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पन्ने पलटने पर...

इकाई 3

इंसानियत की मिसाल	समाचार
दो भाई	कहानी

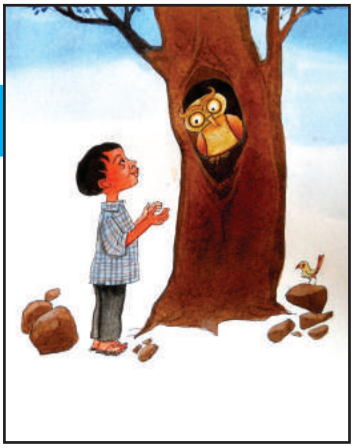

इकाई 4

नन्हा उल्लू	कहानी
बबुआ और बूढ़ा	कविता

इकाई 5

ज़मीं को जादू आता है	कविता
मार्च	संस्मरणात्मक लेख
धूप की संदूक	कविता

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तस्वीरें बताती हैं।

छात्र लिखें

छात्र पढ़ें

छात्र खोजें

छात्र अनुबद्ध कार्य करें

छात्र बताएँ

छात्र एक साथ गाएँ

अध्यापिका कहें

छात्र सृजन करें

छात्र बनाएँ

ग्रूप चर्चा करें

आपसी आकलन करें

छात्र स्व-आकलन करें

अध्यापक आकलन करें

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इकाई - 1

पानी नहीं,
बरसता है जीवन।

' जीवन बरसता है ' ऐसा क्यों कहते हैं?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बादल दानी

बाबुलाल शर्मा 'प्रेम'

चम-चम चमकी बिजली रानी,
उठी गगन में घटा सुहानी,
बादल दानी, बादल दानी,
खूब झमाझम बरसो पानी।

प्यासी चिड़िया,प्यासी गैया,
खाली है सब ताल-तलैया,
सूखे घाट पड़ी है नैया,
हुई मछलियों को हैरानी,
बादल दानी, बादल दानी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सागर से भर-भर जल लाते,
गाँव-गाँव में रस बरसाते,
सब जीवों की प्यास बुझाते,
धरती हो जाती है धानी,
बादल दानी, बादल दानी।

फसल धान की खेतों महके,
राह घाट हरियाली लहके,
मन किसान का गाए चहके,
देख-देख मेढ़ों तक पानी,
बादल दानी, बादल दानी,
खूब झमाझम बरसो पानी।

बारिश से कौन-कौन खुश होते हैं?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ताल-लय के साथ गाएँ

यह गीत कौन गाता होगा?

इसका प्रसंग क्या हो सकता है?

वहाँ कौन-कौन होंगे?

वे क्या-क्या करते होंगे?

दृश्याभास करें।

अपने दृश्याभास के आधार पर रंग भरें

विभिन्न दृश्यों का मेल है			
स्थानों का ज़िक्र है			
सबकी सक्रिय भागीदारी है			
आलापन और दृश्यों में ताल-मेल है			
आशय की स्पष्टता है			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बढ़िया किया है तो तीन गोलों में, अच्छा है तो दो गोलों में और परिमार्जन की आवश्यकता है तो एक गोले में रंग भरें।

लिखें, कितने गोलों में रंग भरा...

गीत कैसा रहा...?

अब नीचे की पंक्तियाँ पढ़ें।

चम-चम चमकी बिजली रानी
उठी गगन में घटा सुहानी

रेखांकित शब्दों की समानता क्या है?

ऐसे जोड़े चुनकर लिखें।

1) ....
....

2) ....
....

3) ....
....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तुकांत शब्द कविता को सुंदर बनाते हैं।

ज़रा ये पंक्तियाँ पढ़ें।

बारिश का मौसम है आया,
हम बच्चों के मन को भाया।

इन पंक्तियों के तुकांत शब्द पहचानें। उनके नीचे रेखा खींचें।

हम भी ऐसी पंक्तियाँ जोड़ें।

....

बारिश का मौसम है आया,
हम बच्चों के मन को भाया।

....

....

....

....

....

....

....

....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अपनी पंक्तियाँ कैसी रही...?

उचित खाने पर ✓ करें			
बारिश के संबंधित हैं			
ताल का पालन किया है			
तुक का पालन किया है			
उचित एवं आकर्षक शीर्षक दिया है			

बाबुलाल शर्मा 'प्रेम'

हिंदी के बालकविता का सशक्त हस्ताक्षर बाबुलाल शर्मा 'प्रेम' का जन्म 1 मई 1935 को उत्तरप्रदेश के हरदोई जिले के नेवादा में हुआ। 'आंचल के फूल' आपका प्रथम गीत संग्रह है। याद के बादल, फिर हसेंगे फूल, टके-टके की बात (कहानी संग्रह) आदि आपकी रचनाएँ हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बारिश कैसे मिली?

वे बिल्ली से मिले।

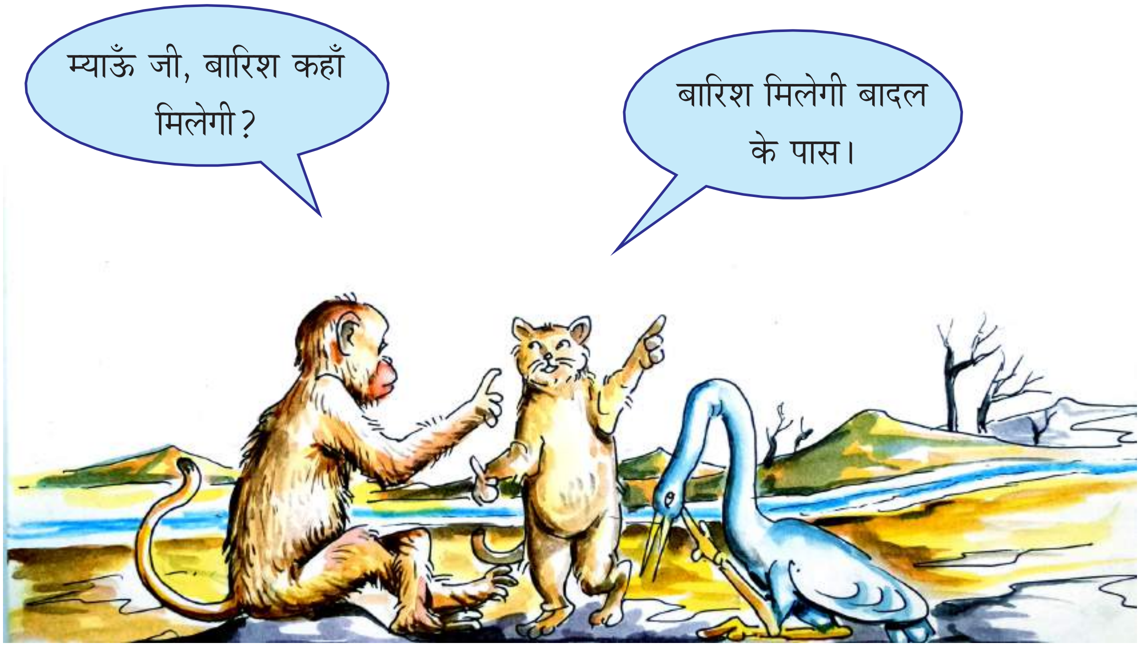

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आगे उन्होंने बैल को देखा।

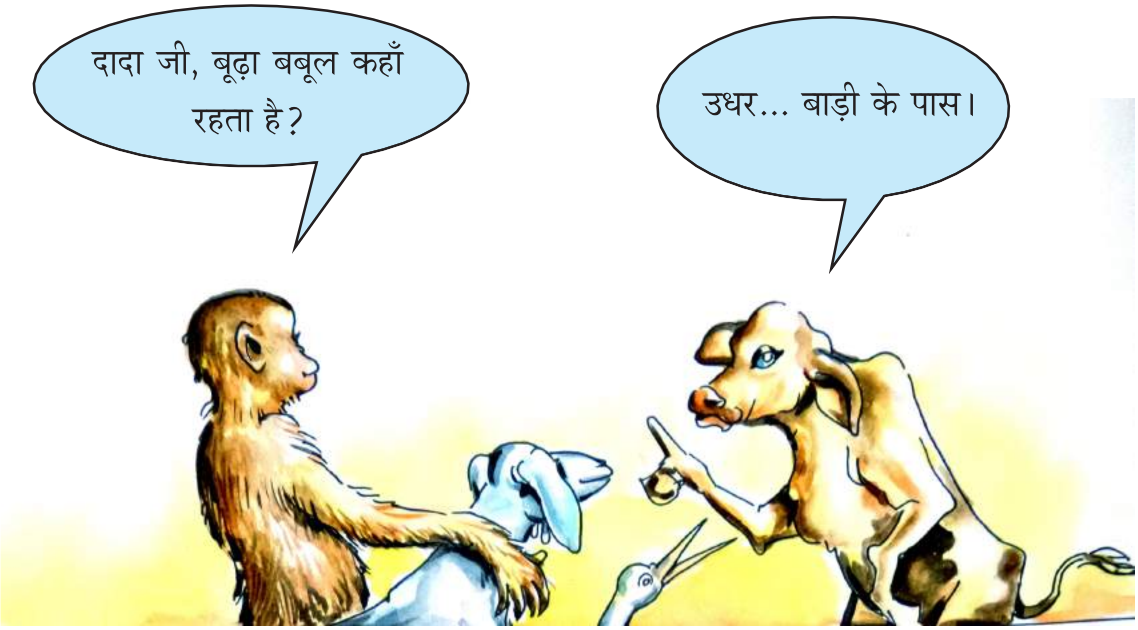

KT 33-2/Hindi - 6

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अंत में वे बूढ़े बबूल के पास पहुँचे।

सबने मिलकर बादल को बचाया।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

'बादल काँटों में फँसा हुआ है।' इसका मतलब क्या होगा?
आजकल हमारे बादल की हालत क्या है?

चर्चा करें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कविता और चित्र-कथा कैसी लगी?

बारिश के आने पर प्रकृति में क्या-क्या बदलाव आता है?

विवरण तैयार करें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एक बार अपने विवरण पर नज़र डालें।
अब यह कार्य करें।

मेरे विवरण में...

परखें, उचित खाने में ✓ चिह्न लगाएँ।

शीर्षक आगे पढ़ने की प्रेरणा देता है।			
बारिश के आगमन की सूचना है।			
पेड़-पौधों और नदी-नालों में आए बदलाव का ज़िक्र है।			
जीव-जंतुओं की खुशी का विवरण है।			

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आनेवाले दिनों के लिए...

" बूँद बूँद नहीं बरतेंगे,
तो बूँद बूँद को तरसेंगे।"

कोलैश तैयार करें।
'बरसात की झाँकियाँ'

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चित्र पहचानें बक्सा भरें...

वर्ग पहेली

1			2
		3	4
	5		
6			

1 →

1 ↓

2 ↓

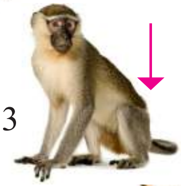

3 ↓

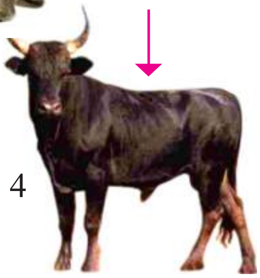

4 ↓

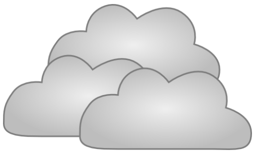

5 →

6 →

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मदद लें...

काँटा	മുള്ള് முள் ಮುಳ್ಳು thorn
किसान	കർഷകൻ விவசாயி ರೈತ farmer
खाली	ഒഴിഞ്ഞ ஒன்றுமில்லாத ಖಾಲಿ empty
खूब	ധാരാളം ஏராளம் ಧಾರಾಳ plenty
गगन	ആകാശം வானம் ಆಕಾಶ sky
गैया	गाय പശു பசு ಪಶು cow
घटा	മേഘം மேகம் ಮೋಡ cloud
घाट	കടവ് படகுத்துறை, கடக்குமிடம் ದೋಣಿ ದಾಟುವ ಸ್ಥಳ ferry
चहकना	പക്ഷികളുടെ ചിലക്കൽ பறவைகளின் இனிய கீதம் ಪಕ್ಷಿಗಳ ಕಲರವ singing or warbling of birds
तरसना	ദീനതയോടെ കെഞ്ചുക தாழ்மையாக கெஞ்சுதல் ದೈನ್ಯತೆಯಿಂದ ಬೇಡಿಕೊಳ್ಳು to crave for
ताल-तलैया	तालाब കുളം குளம் ಹಳ್ಳ pond
धान	ധാന്യം தானியம் ಧಾನ್ಯ paddy
धानी	हरियाली പച്ചപ്പ് பசுமையான ಹಸಿರು ಬಯಲು greenary
नैया	नाव തോണി படகு ದೋಣಿ boat
प्यास बुझाती	ദാഹം ശമിപ്പിക്കുന്നു *தாகத்தை தணித்தல்* ದಾಹ ತೀರಿಸು quence ones thirst

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्यासी	ദാഹമുള്ള தாகமுள்ள ಬಾಯಾರಿಕೆ thirsty
फँसा	കുടുങ്ങിയ மாட்டிக்கொண்ட ಸಿಕ್ಕಿಹಾಕಿಕೊಂಡ trapped
बबूल	ഒരു ഔഷധ മരം முள் உள்ள மரம் ಔಷಧೀಯ ಮರ a medicinal tree
बरतना	ഉപയോഗിക്കുക பயன்படுத்துதல் ಉಪಯೋಗಿಸು to use
बाड़ी	ചെറിയ ഫലവൃക്ഷത്തോട്ടം சிறிய பழத்தோட்டம் ಹಣ್ಣುಗಳ ತೋಟ a small orchard
बारिश	മഴ மழை ಮಳೆ rain
बिजली	മിന്നൽ மின்னல் ಮಿಂಚು lightning
मछलियाँ	മത്സ്യങ്ങൾ மீன்கள் ಮೀನುಗಳು fishes
महके	സുഗന്ധം പരത്തുന്ന *நறுமணம் பரப்பும்* ಸುಗಂಧ ಪಸರಿಸು emiting fragrance
मेढ़ों	വരമ്പ് வரம்பு ಹುಣಿ field ridge
सागर	समुद्र സമുദ്രം கடல் ಸಮುದ್ರ sea
सुहानी	സന്തോഷപ്രദമായിരിക്കുന്ന மகழ்ச்சியாக இருக்கின்ற ಆಹ್ಲಾದಕರವಾದ pleasing
सूखे	ഉണങ്ങിയ உலர்ந்த, ஈரமில்லாத ಒಣಗಿದ dry
हैरानी	അത്ഭുതം அற்புதம் ಅದ್ಭುತ perplexity

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अधिगम उपलब्धियाँ

- चित्र वाचन करके आशय प्रस्तुत करता है।
- बालगीत का ताल-लय के साथ आलाप करता है।
- बालगीत का आशय मौखिक रूप से प्रस्तुत करता है।
- बालगीत का दृश्याभास करता है।
- कविताँश में तालयुक्त पंक्तियाँ जोड़ता है।
- चित्र कहानी पढ़कर आशय मौखिक रूप से प्रस्तुत आशय करता है।
- विवरण तैयार करता है।
- पोस्टर का आशय प्रस्तुत करता है।
- कोलैश तैयार करता है।
- चित्र-पहेली बुझाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इकाई - 2

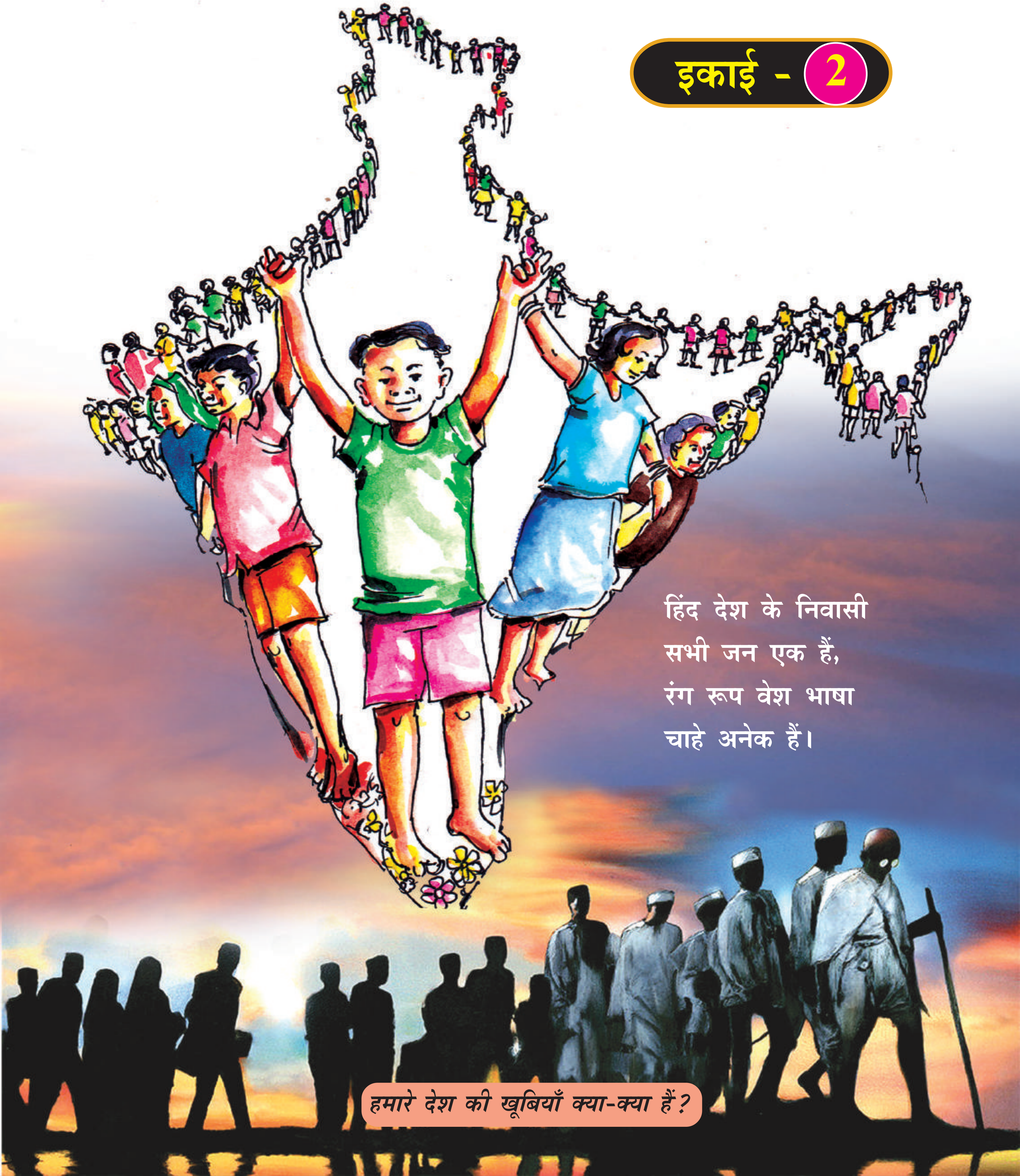

हिंद देश के निवासी
सभी जन एक हैं,
रंग रूप वेश भाषा
चाहे अनेक हैं।

हमारे देश की खूबियाँ क्या-क्या हैं?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जगमग तारा

बाल कविता

देश हमारा, देश हमारा
चमके जैसे जगमग तारा।
देश हमारा, देश हमारा
सत्य अहिंसा का रखवारा।
देश हमारा, देश हमारा
बलिदानों ने उसे संवारा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

देश हमारा, देश हमारा
हमें है अपनी जान से प्यारा।
देश हमारा, देश हमारा
सागर ने जिसका पाँव पसारा।
देश हमारा, देश हमारा
सत्य की जय संदेश हमारा।
देश हमारा, देश हमारा
हमें है अपनी जान से प्यारा।

तुकांत शब्दों का चयन करें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

'चमके जैसे जगमग तारा।' से क्या मतलब है?

भारत किन-किन क्षेत्रों में जगमग रहा है?

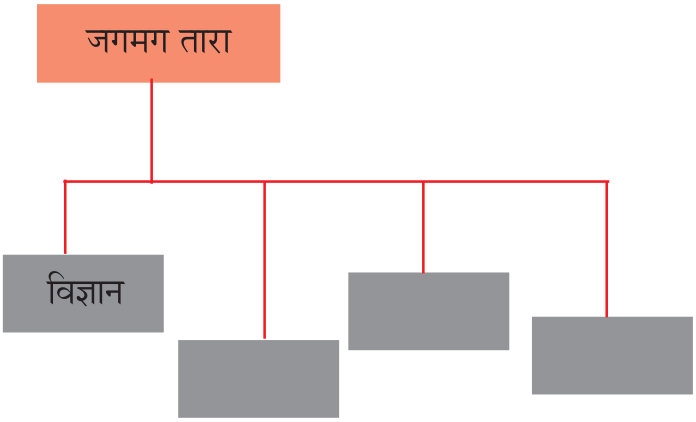

लिखें विज्ञान के अलावा और किन-किन क्षेत्रों में भारत जगमग रहा है?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इस कविता का आशय लिखें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

देशभक्ति गीत

गाएँ...

ऐ मेरे वतन के लोगो,
तुम खूब लगा लो नारा।
ये शुभदिन हैं, हम सब का,
लहरा लो तिरंगा प्यारा।
पर मत भूलो सीमा पर,
वीरों ने हैं प्राण गवाए,
कुछ याद उन्हें भी कर लो,
जो लौट के घर न आए।
ऐ मेरे वतन के लोगो,
ज़रा आँख में भर लो पानी,
जो शहीद हुए हैं उनकी,
ज़रा याद करो कुर्बानी।
जब घायल हुआ हिमालय,
खतरे में पड़ी आज़ादी
जब तक थी साँस लड़े वो,
फिर अपनी लाश बिछा दी।
संगीन पे धर कर माथा,
सो गए अमर बलिदानी।
(जो शहीद हुए...
जब देश में थी दीवाली,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

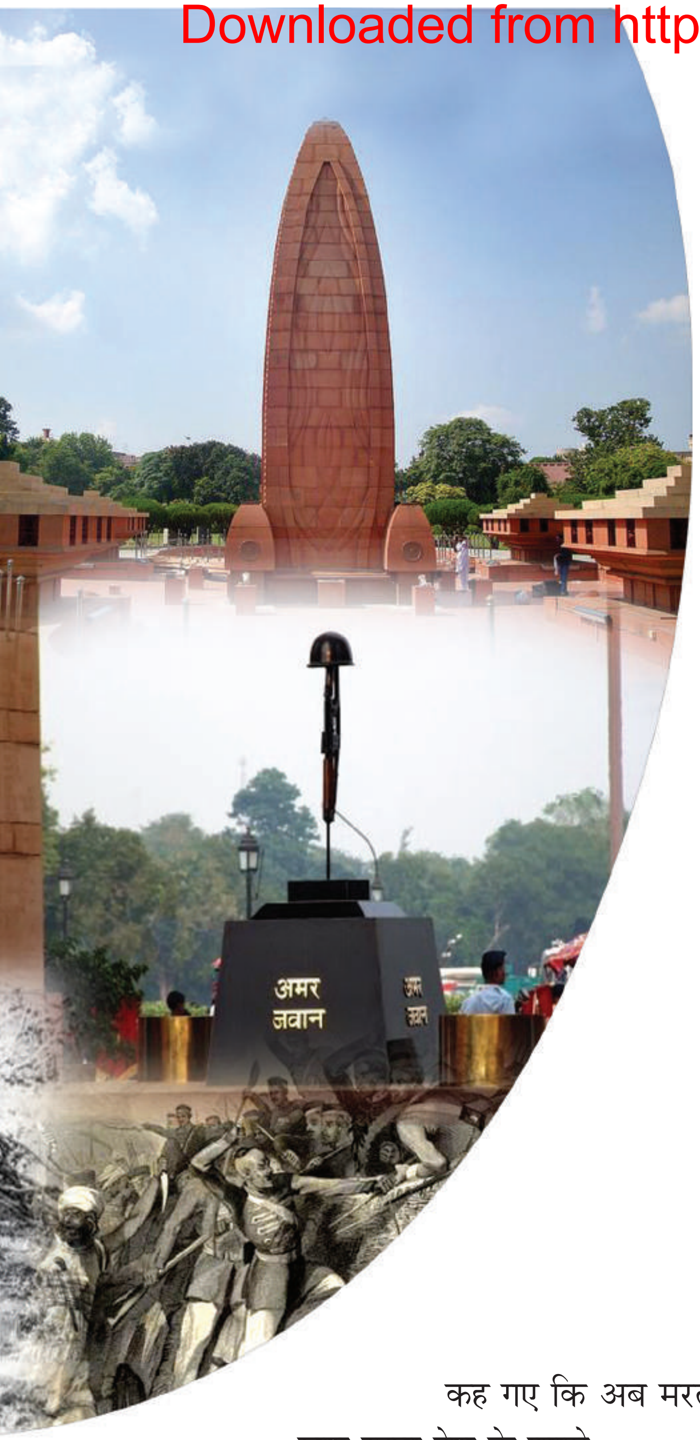

वो खेल रहे थे होली।
जब हम बैठे थे घरों में,
वो झेल रहे थे गोली।
थे धन्य जवान वो अपने,
थी धन्य वो उनकी जवानी।

(जो शहीद हुए...

कोई सिख कोई जाट मराठा,
कोई गुरखा कोई मद्रासी,
सरहद पर मरनेवाला,
हर वीर था भारतवासी।
जो खून गिरा पर्वत पर,
वो खून था हिंदुस्तानी

(जो शहीद हुए....

थी खून से लथपथ काया
फिर भी बंदूक उठाके,
दस-दस को एक ने मारा,
फिर गिर गए होश गँवा के
जब अंत समय आया तो,

कह गए कि अब मरते हैं...

खुश रहना देश के प्यारो,
अब हम तो सफर करते हैं।
क्या लोग थे वो दीवाने,
क्या लोग थे वो अभिमानी

(जो शहीद हुए...

जय हिंद, जय हिंद की सेना

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हिंदुस्तान हमारा

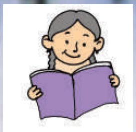

भारत संसार का ऐसा ताज है, जिसकी चमक विश्व भर फैली है। इसकी खूबसूरत भौगोलिक झलक, समय-समय पर रंग बदलते अनोखे मौसम, शान बनी संपन्न संस्कृति सब इस ताज में जड़े हीरे हैं। घने पेड़ों से सजे पर्वत, खिल-खिलाकर बहती नदियाँ, काली घटा से अपने बालों को खोलकर झूमती बारिश, हरा घाँघरा पहनकर नाचते लह-लहाते खेत सब भारत की अपनी विशेषताएँ हैं। छहों ऋतुएँ मेहमान बनकर मुस्कराती हुई इस देश से गुज़र

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जाती हैं। गर्मी, सर्दी और बारिश सभी यहाँ हर साल अतिथि बनकर आते हैं। ये फल, फूल, धूप, पानी, जैसे कई नज़ारे लाते हैं। जिससे सज-धजता भारत देखने लायक है। रहन-सहन, वेश-भूषा, खान-पान, भाषा तथा धर्म अलग-अलग होने पर भी भारतवासी एकता के साथ रहते हैं।सब हिंदुस्तानी कहलाते हैं, इनकी पहचान एक है। इसीलिए ही मशहूर शायर मुहम्मद इक़बाल ने फ़रमाया-*"सारे जहाँ से अच्छा हिंदोसिताँ हमारा।"*

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

♦ लेख पढ़ लिया है न? अब ये वाक्य पढ़ें।

'घने पेड़ों से सजे पर्वत।'

'घने पेड़ों से सजे' ऐसे प्रयोग वाक्य की शोभा बढ़ाती है।

लेख से ऐसे वाक्यों को चुनकर लिखें।

तालिका की पूर्ति करें।

काली घटा से अपने बालों को खोलकर झूमती बारिश	भारी वर्षा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ये नारे गीत पढ़ें।

“सत्य अहिंसा का रखवारा भारत मेरा प्यारा-प्यारा। ”	“भारत है देश हमारा फहराएँगे तिरंगा प्यारा।”

और भी है भारत की खूबियाँ

आप भी लिखें नारागीत

मेरा नारा गीत...

सही खाने में रंग भरें।			
तालयुक्त है।	मेरा	हमारा	अपना
देशप्रेम से ओत-प्रोत है।	प्यारा	न्यारा	निराला
जोश है।	भारत	देश	वतन

शब्दों को क्रम से लिखें - ....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वर्णों से खेलें...

ताल → माल → मात → गीत

यहाँ 'ताल' शब्द से शुरू करके केवल एक अक्षर को बदलते हुए हम 'गीत' शब्द तक पहुँचे हैं। इसी तरह 'केरल' शब्द से शुरू करके 'भारत' शब्द तक पहुँचना है। शर्त यह है कि एक बार केवल एक ही अक्षर बदलें, और प्रत्येक शब्द सार्थक हो।

केरल → .... → .... → ....

.... → .... → .... → ....

.... → .... → .... → **भारत**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

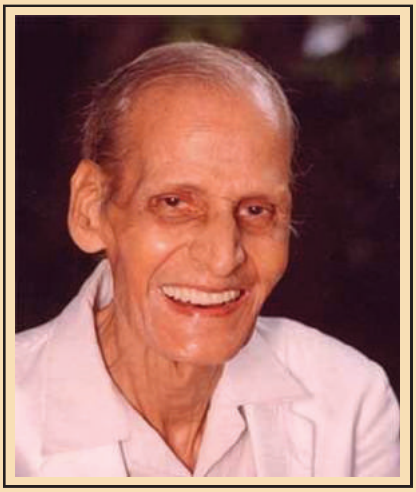

कवि प्रदीप

कवि प्रदीप भारतीय कवि एवं गीतकार थे। अपना देशभक्ति गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगो' के लिए आप प्रसिद्ध हैं। आपने 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान शहीद हुए सैनिकों की श्रद्धांजलि में यह गीत लिखा था। लता मंगेशकर द्वारा गाए इस गीत का तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की उपस्थिति में 26 जनवरी 1963 को दिल्ली के रामलीला मैदान में सीधा प्रसारण किया गया। गीत सुनकर जवाहरलाल नेहरू की आँखें भर आई थीं।

आपका जन्म मध्यप्रदेश के उज्जैन में 6 फरवरी 1915 को हुआ था। पांच दशक के अपने पेशे में कवि प्रदीप ने 71 फिल्मों के लिए 1700 गीत लिखे। भारत सरकार ने उन्हें 1997-98 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया। आपकी मृत्यु 11 दिसंबर 1998 में हुई।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मदद लें...

आज़ादी	സ്വാതന്ത്ര്യം சுதந்திரம் ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ independance
उजाला	പ്രകാശം வெளிச்சம் ಪ್ರಕಾಶ light
काया	शरीर
कुर्बानी	बलिदान ത്യാഗം தியாகம் ತ್ಯಾಗ sacrifice
खड़ा	നിൽക്കുന്ന நகராமல் நிற்கின்ற ನಿಂತ standing
खतरा	അപകടം ஆபத்து ಅಪಾಯ danger
खून	രക്തം இரத்தம் ರಕ್ತ blood
खून से लथपथ	रक्त से भीगा
गँवाई	ത്യജിച്ചു தியாகம் செய்து ತ್ಯಜಿಸಿದ sacrificed
गहने	ആഭരണങ്ങൾ நகைகள் ಆಭರಣಗಳು ornaments
गुज़रती	കടന്നുപോകുന്ന *கடந்து சென்ற* ದಾಟು passing
घने बाल	ഇടതൂർന്ന മുടി அடர்ந்த கூந்தல் ದಟ್ಟ ಕೂದಲು thick hair
घाँघरा	പാവാട பாவாடை ಲಂಗ skirt
चमके	തിളങ്ങി பிரகாசமாக சுடர் வீசிய ಪ್ರಕಾಶಿಸು shined
ज़रा	അല്പം கொஞ்சம் ಸ್ವಲ್ಪ little
जवान	ജവാൻ படைவீரன் ಸೈನಿಕ soldier
जवानी	യുവത്വം இளமைப்பருவம் ಯೌವ್ವನ youth
झूमती	ആടുന്ന ஆடுதல் ತೂಗು swinging
तिरंगा	ത്രിവർണ്ണ പതാക மூவர்ணக்கொடி ತ್ರಿವರ್ಣ ಧ್ವಜ tri colour flag
दीवानी	ഉന്മത്തമായ வெறிபிடித்த ಉನ್ಮತ್ತ crazy
नारा	മുദ്രാവാക്യം முழக்கம் ಘೋಷಣೆ slogan
प्यारा	പ്രിയപ്പെട്ട பிரியமான ಇಷ್ಟವಾದ loving
पसारा	നീട്ടിയ நீட்டிய ಚಾಚಿದ streched
पहनकर	ധരിച്ചിട്ട് அணிந்துகொண்டு ಧರಿಸಿ wearing

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

फ़रमया	कहा
बंदूक	തോക്ക് துப்பாக்கி ಕೋವಿ gun
बलिदान	कुर्बानी
बिछा दी	വിരിച്ചു பிரித்து ಹರಡು spread
मत	അരുത് கூடாது ಬೇಡ no
मत भूलो	മറക്കരുത് மறந்துவிடாதே ಮರೆಯದಿರು dont forget
मस्तक	ശിരസ്സ് தலை ತಲೆ head
माथा	നെറ്റി நெற்றி ಹಣೆ forehead
मौसमी	കാലാവസ്ഥ സംബന്ധിച്ച காலநிலை தொடர்பான ಹವಾಮಾನಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿ seasonal
याद	ഓർമ്മ நினைவாற்றல் ನೆನಪು memory
रखवारा	സംരക്ഷകൻ பாதுகாவலன் ಸಂರಕ್ಷಕ protector
लहरा लो	വീശൂ வீசு ಬೀಸು to wave
लाश	ശവശരീരം இறந்த உடல் ಮೃತಶರೀರ dead body
लौट के	മടങ്ങി (വരുക) திரும்பிவருதல் ತಿರುಗಿಬರು return
वतन	മാതൃഭൂമി தாய்நாடு ಮಾತೃಭೂಮಿ native country
विश्व	संसार
शहीद	രക്തസാക്ഷി உயிர்தியாகி ಹುತಾತ್ಮ martyre
संगीन	ബയണറ്റ് ஒரு துப்பாக்கியின் முகப்பில் பொருத் தக்கூடிய கத்தி ಬಯೋನೆಟ್ bayonet
संवारा	അലങ്കരിച്ച அலங்கரித்த ಅಲಂಕರಿಸಿದ decorated
सफर	यात्रा
सरहद,सीमा	അതിർത്തി எல்லை ಮೇರೆ border
होश	ബോധം உணர்வு நிலை ಪ್ರಜ್ಞೆ conciousness

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अधिगम उपलब्धियाँ

- चित्र वाचन करके देश की विशेषताएँ लिखता है।
- बाल कविता का आलाप करता है।
- बाल कविता पढ़कर आशय लिखता है।
- बाल कविता के तुकांत शब्दों को पहचानकर सूचीबद्ध करता है।
- देश-भक्ति गान का आलाप करता है।
- देश की महिमा समझकर नारागीत तैयार करता है।
- वर्णनात्मक लेख पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- वर्णनात्मक लेखों की विशेषता प्रस्तुत करता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इकाई - 3

आज फिर से तुम
बुझा दीपक जलाओ।

चित्र और कवितांश क्या बताते हैं?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

समाचार

इंसानियत की मिसाल

बद्रीनाथः उत्तराखंड में 18 दिनों से फँसे लोगों की जान बचाने का काम खतम हो चुका है। कई लोगों ने अपनी जान हथेली पर रखकर यह काम किया।

उत्तराखंड में आए सैलाब ने बद्रीनाथ में भी जमकर तबाही मचाई। हज़ारों तीर्थयात्री बुरी तरह फँस गए थे। उन्हें हेलिकॉप्टर के ज़रिए बाहर निकाला गया।

वहाँ लखनऊ के राजीव शर्मा और राजस्थान के पारीख को घर जाने की बारी कई दिन पहले आ गई थी। लेकिन इन्होंने जाने से मना कर दिया। औरों की तकलीफ देखकर इन्होंने अपना मौका दूसरे ज़रूरतमंदों को दे दिया। इस घोर प्रलय में सब कुछ बह गया, लेकिन इंसानियत रह गई।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पोस्टर

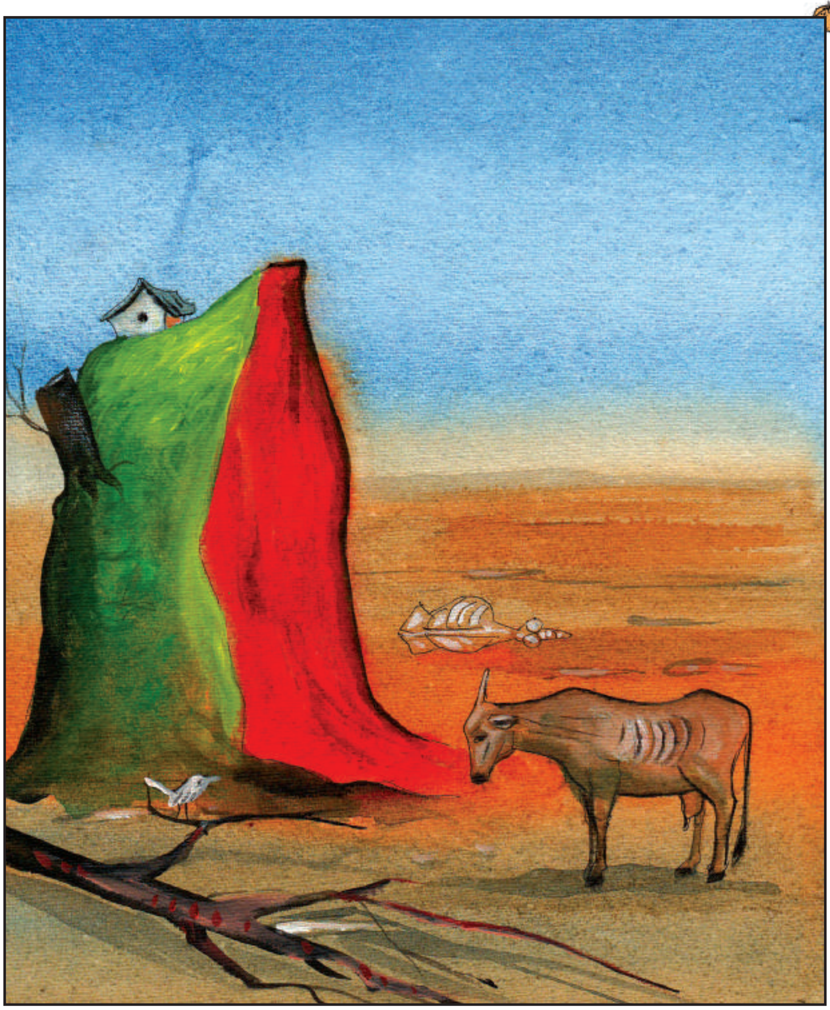

समाचार पढ़ा, चित्र-वाचन भी किया?
अब बताएँ...

सैलाब जैसी प्राकृतिक दुर्घटनाओं और इस दृश्य के बीच का संबंध क्या है?

संदेशवाक्य जोड़ें ,
पोस्टर को और सार्थक बनाएँ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

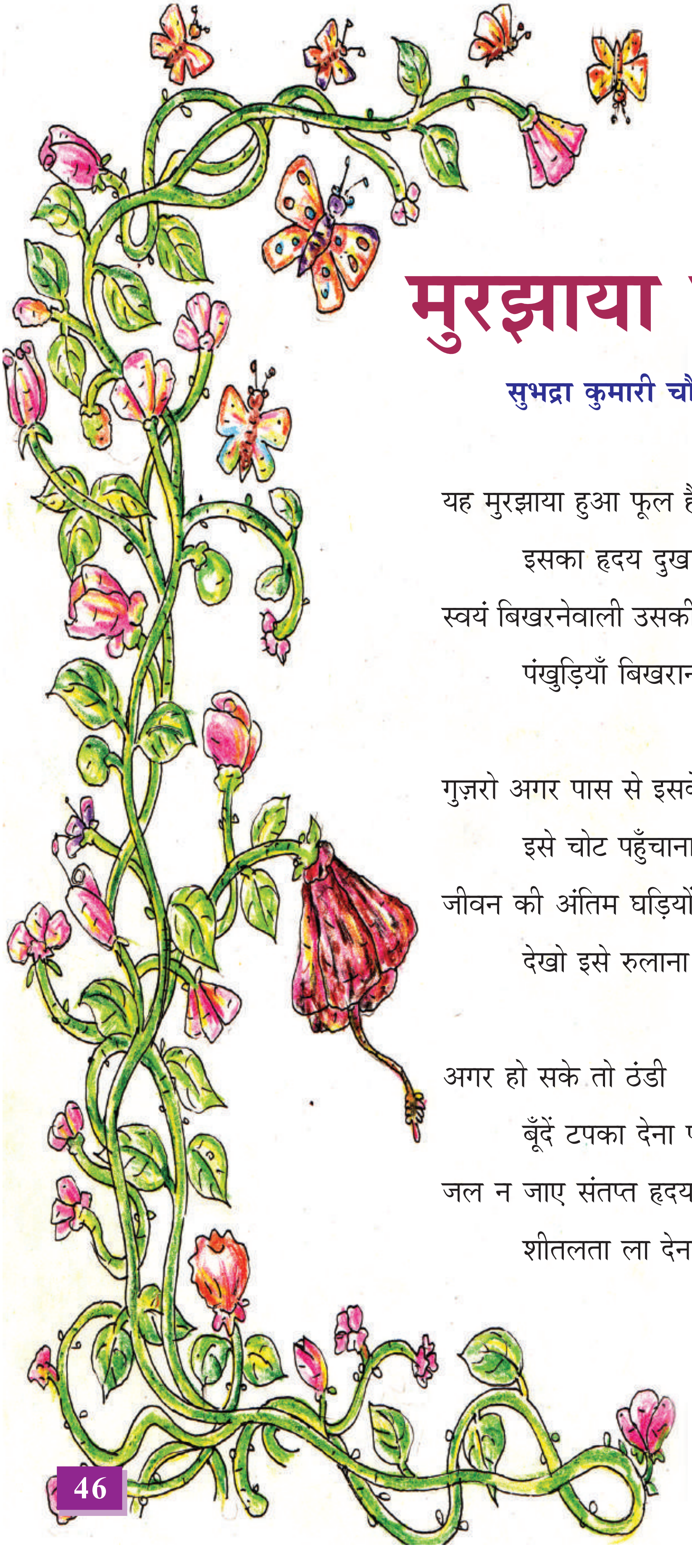

कविता

मुरझाया फूल

सुभद्रा कुमारी चौहान

यह मुरझाया हुआ फूल है,
इसका हृदय दुखाना मत।
स्वयं बिखरनेवाली उसकी,
पंखुड़ियाँ बिखराना मत।

गुज़रो अगर पास से इसके,
इसे चोट पहुँचाना मत।
जीवन की अंतिम घड़ियों में,
देखो इसे रुलाना मत।

अगर हो सके तो ठंडी
बूँदें टपका देना प्यारे।
जल न जाए संतप्त हृदय
शीतलता ला देना प्यारे।

‘हृदय दुखाना’ और ‘ठंडी बूँदें टपकाना’ से क्या तात्पर्य है?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

'हृदय दुखाना' और 'ठंडी बूँदें टपकाना' जैसे अन्य कौन-कौन से प्रयोग कविता में हैं?

....

....

मुरझाया फूल किन-किन के प्रतीक हैं?

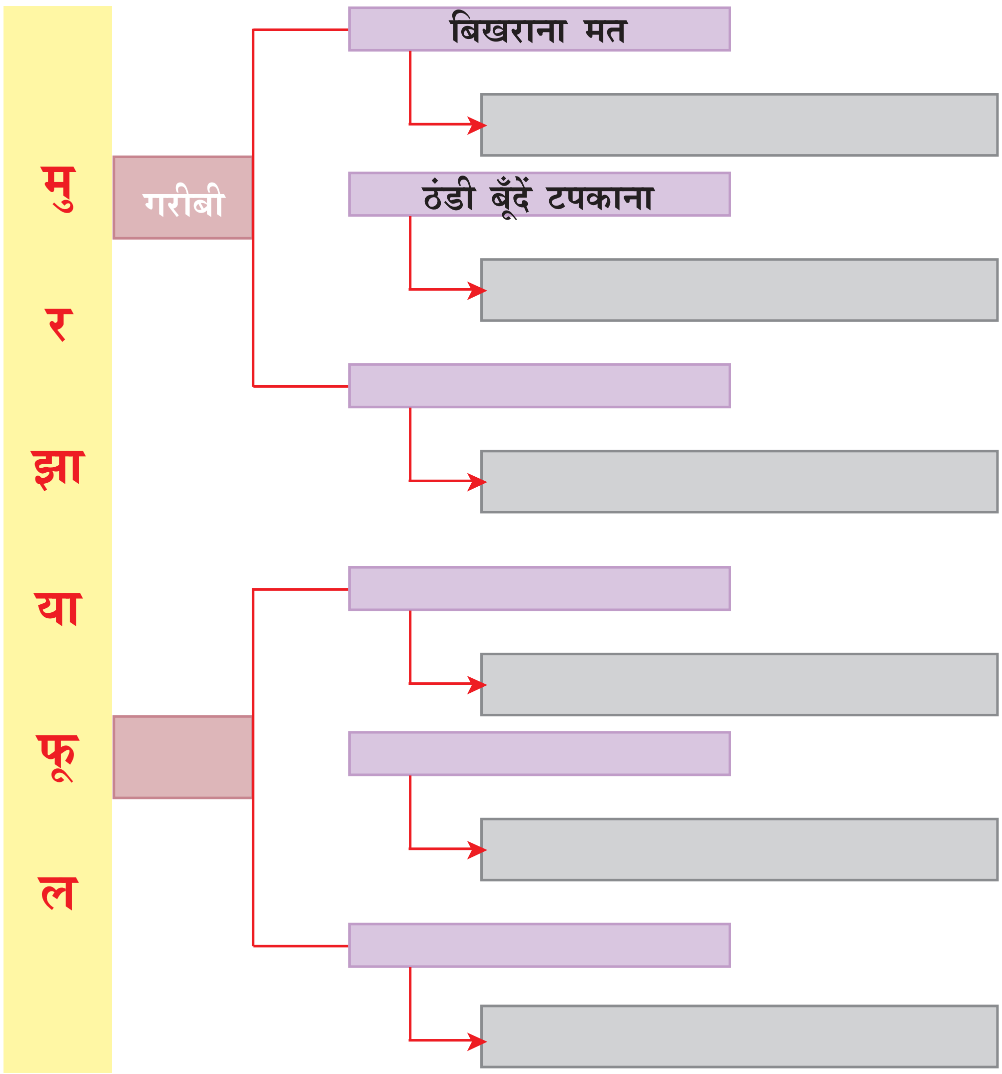

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कविता का आशय लिखें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गुब्बारे को रंग दें।

मुरझाया फूल कविता का आशय लिखने का प्रयास किया है।

कवि परिचय और आशय अधूरा अधूरा लिखा है।

कवि परिचय के साथ आशय लिखा है।

कवि परिचय के साथ आंशिक रूप से प्रतीकों की व्याख्या करके आशय लिखा है।

कवि परिचय के साथ मुरझाया फूल के प्रतीकों की व्याख्या करके पूर्ण रूप से आशय लिखा है।

सुभद्रा कुमारी चौहान

आप हिंदी के मशहूर कवयित्री थी। आपका जन्म 16 अगस्त 1904 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जिले के निहरपुर नामक गाँव में हुआ। त्रिधारा, मुकुल, यह कदंब का पेड़, सीधे साधे चित्र, मेरा नया बचपन, बिखरे मोतीआदि आपकी रचनाएँ हैं। आपका निधन मध्य प्रदेश के सियोनी के पास एक कार दुर्घटना में 15 फरवरी 1948 को हुआ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लोककथा

दो भाई

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दो भाई थे। बड़े की शादी हो गई थी। उसके दो बच्चे भी थे। छोटा कुँआरा था। दोनों भाई साझा खेती करते थे। एक बार उनके खेत में गेहूँ की फसल पककर तैयार हो गई थी। दोनों ने मिलकर फसल काटी और गेहूँ तैयार किया। इसके बाद दोनों ने आधा आधा गेहूँ बाँट लिया। अब गेहूँ ढोकर घर ले जाना बचा था। रात हो गई थी। इसलिए काम अगले दिन ही होना था। रात को दोनों को फसल की रखवाली के लिए खलिहान पर ही रुकना था। दोनों को भूख भी लगी थी। उन्होंने बारी-बारी से खाने का सोचा।

पहले बड़ा भाई खाना खाने घर गया। छोटा भाई खलिहान पर ही रुका रहा। वह सोचने लगा- भाई की शादी हो गई है। उनका परिवार है। इसलिए उन्हें ज़्यादा गेहूँ की ज़रूरत होगी। यह सोचकर उसने अपनी ढेर से कई टोकरी गेहूँ लेकर बड़े भाई वाले ढेर में मिला दी। बड़ा भाई थोड़ी देर में खाकर लौटा। छोटा खाना खाने घर चला गया। बड़ा भाई सोचने लगा- मेरा तो परिवार है। बच्चे हैं। वे मेरा ध्यान रख सकते हैं। लेकिन छोटा भाई अकेला है। उसे देखनेवाला कोई नहीं है। उसे ज़्यादा गेहूँ की ज़रूरत है। उसने अपने ढेर से उठाकर कई टोकरी गेहूँ छोटे भाई वाले गेहूँ के ढेर में मिला दी।

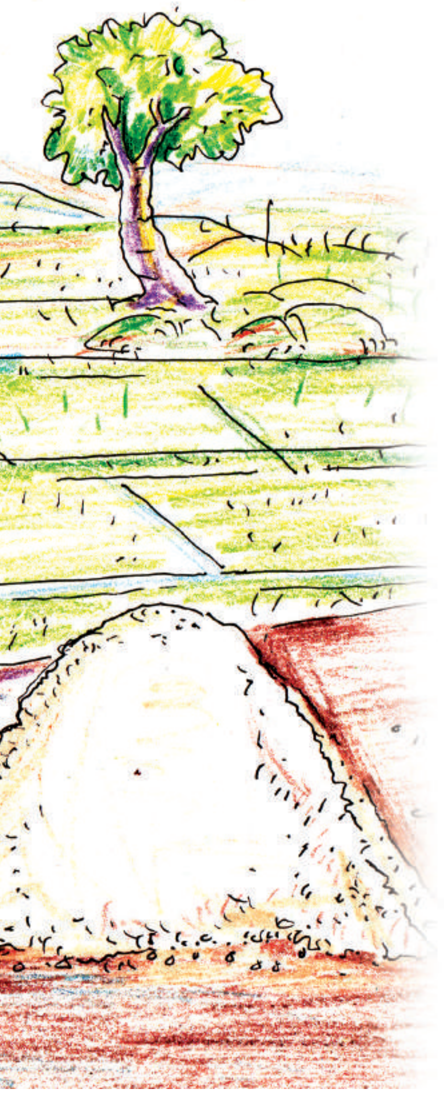

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पढ़ें।

दो भाई थे।

बड़े की शादी हो गई थी। उसके दो बच्चे भी थे।

छोटा कुँआरा था।

दोनों भाई साझा खेती करते थे।

इन वाक्यों में 'था', 'थे','थी' शब्द क्या अर्थ प्रदान करते है?

कहानी से ऐसे वाक्यों को पहचानकर लिखें।

1

2

3

4

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कहानी कैसी रही..?

अब यह अंश पढ़ें।

रात को दोनों को फसल की रखवाली के लिए खलिहान पर ही रुकना था। दोनों को भूख भी लगी थी। उन्होंने बारी-बारी से खाने का सोचा। पहले बड़ा भाई खाना खाने घर गया। छोटा भाई खलिहान पर ही रुका रहा। वह सोचने लगा- भाई की शादी हो गई है। उनका परिवार है। इसलिए उन्हें ज़्यादा गेहूँ की ज़रूरत होगी। यह सोचकर उसने अपनी ढेर से कई टोकरी गेहूँ लेकर बड़े भाई वाले ढेर में मिला दी। बड़ा भाई थोड़ी देर में खाकर लौटा।

संवाद तथा विचार जोड़कर इस अंश का पुनर्लेखन करें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

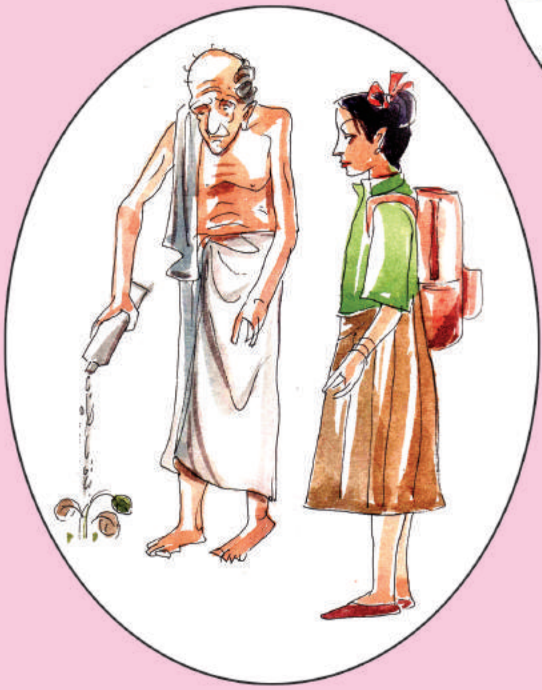

दादाजी ने पहले मुरझाए पौधे को पानी दिया।
इससे क्या संदेश मिलता है?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लड़की और दादाजी के बीच में क्या बातचीत हुई होगी?

लिखें

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गुब्बारों को पकड़ें

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गुब्बारों से अधिकाधिक वाक्य बनाएँ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मदद लें...

अकेला	തനിച്ച് தனியாக ಒಬ್ಬಂಟಿ alone
आधा	പകുതി பாதி ಅರ್ಧ half
इंसानियत	മനുഷ്യത്വം மனிதத்தன்மை ಮಾನವೀಯತೆ humanity
कुँआरा	അവിവാഹിതൻ திருமணம் செய்துகொள்ளாதவன் ಅವಿವಾಹಿತ bachelor
खत्म	അവസാനിക്കുക முடிவுக்கு வருதல் ಮುಗಿಸು end
खलिहान	കളപ്പുര தானியக்களஞ்சியம் ಧಾನ್ಯ ಸಂಗ್ರಹಾಲಯ barn
खेती	കൃഷി விவசாயம் ಕೃಷಿ farming
गेहूँ	ഗോതമ്പ് கோதுமை ಗೋಧಿ wheat
घड़ियाँ	മണിക്കൂറുകൾ மணிக்கூர்கள் ಘಂಟೆಗಳು hours
घूर	ഭയാനകമായ அச்சம் நிறைந்துள்ள
चोट	മുറിവ് காயம் ಗಾಯ wound
जमकर	കൂടിച്ചേർന്ന് ஒன்றுபட்டு ಒಟ್ಟಾಗಿ soldified
ज़रूरतमंद	ആവശ്യക്കാർ தேவையுள்ளவர் ಅಗತ್ಯ needy
जान	ജീവൻ உயிர் ಜೀವನ life
टपका देना	വീഴ്ത്തുക வீழச்செய்தல் ಹನಿಸು to drop
टोकरी	ചെറിയ കുട്ട சின்னக்கூடை ಸಣ್ಣ ಬಾಲ್ದಿ small basket

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ढेर	കൂമ്പാരം குவியல் ರಾಶಿ heap
ढोकर	ചുമന്ന്കൊണ്ട് சுமந்து செல்லல் ಹೊತ್ತುಕೊಂಡು carrying
तकलीफ़	ബുദ്ധിമുട്ട് கடினம் ಕಷ್ಟ difficulty
तबाही	നാശം பெரும் அழிவு ನಾಶ destruction
पंखुड़ियाँ	ഇതളുകൾ இதழ்கள் ಎಸಳು Pettals
परिवार	കുടുംബം குடும்பம் ಕುಟುಂಬ family
प्रलय	വെള്ളപ്പൊക്കം வெள்ளப்பெருக்கம் ನೆರೆ flood
फसल	വിളവ് அறுவடை ಬೆಳೆ crop
बाँट लिया	ഭാഗിച്ചു பங்குவைத்து ಪಾಲುಮಾಡಿ devided
बिखरना	ചിതറുക சிதறுதல் ಹರಡಿದ to be scattered
भूख	വിശപ്പ് பசி ಹಸಿವು hunger
मिसाल	മാതൃക உவமை ಮಾದರಿ simile
मुरझाया	വാടിയ வாடிய ಬಾಡಿದ withered
मौका	അവസരം வாய்ப்பு ಅವಕಾಶ chance
सैलाब	വെള്ളപ്പൊക്കം வெள்ளப்பெருக்கம் ನೆರೆ flash flood
साझा	പങ്കാളിത്തം பங்களிப்பு ಪಾಲುದಾರಿಕೆ partnership

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अधिगम उपलब्धियाँ

- चित्रवाचन करके आशय प्रस्तुत करता है।
- समाचार पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- संदेशवाक्य जोड़कर पोस्टर तैयार करता है।
- कविता पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- कविता पाठ करता है।
- लोककथा पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इकाई - 4

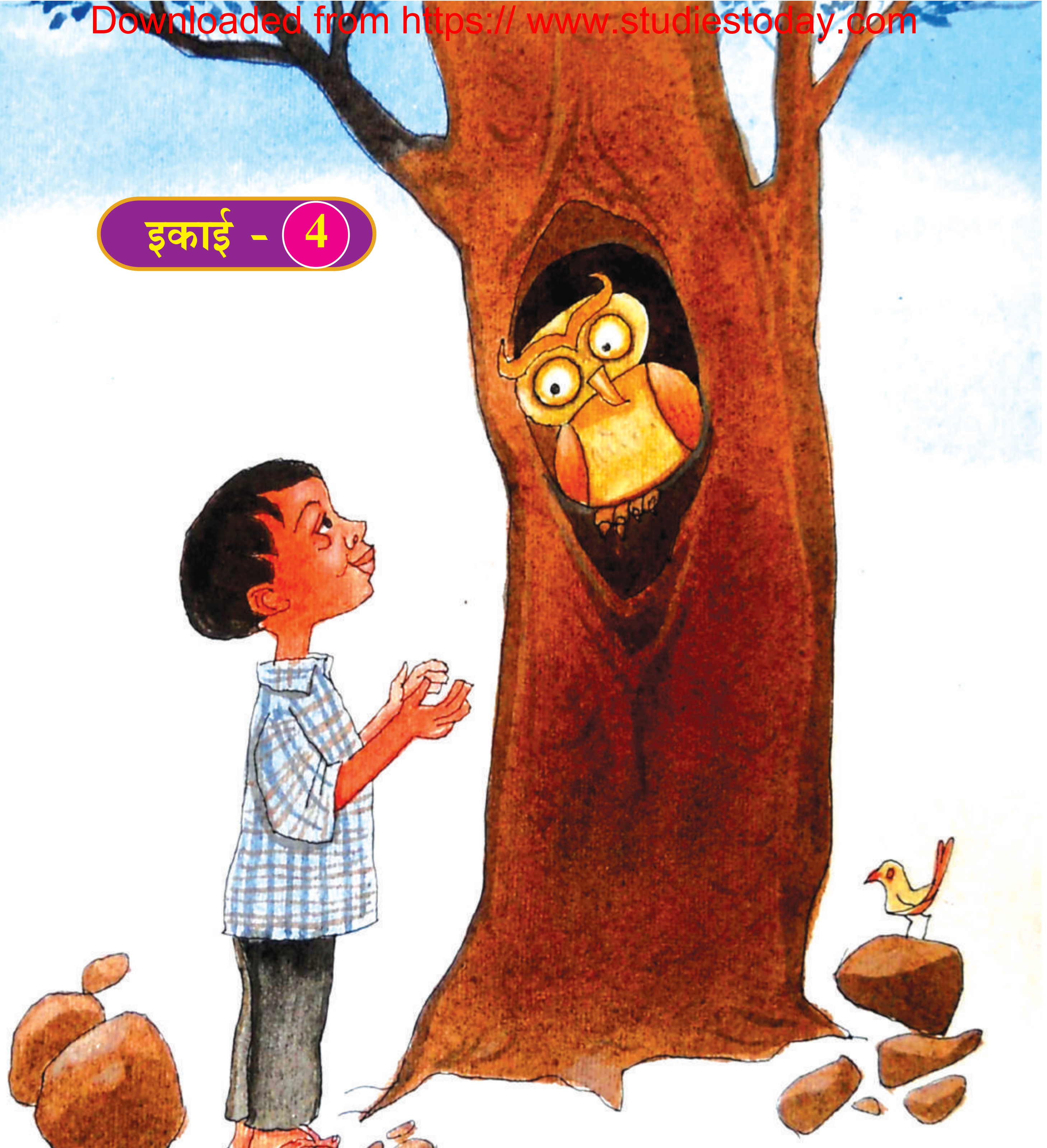

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय
ढाई आच्छर प्रेम का पढ़ै सो पंडित होय।

चित्र में क्या-क्या है?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कहानी

नन्हा उल्लू

जब वह दो साल का हो गया, तो नन्हे उल्लू ने सवाल पूछना शुरू किया। पूरी रात वह अपनी अम्मा के संग सितारों के नीचे बैठा रहता।

"आसमान में कितने सितारे हैं?" उसने एक रात अम्मा से पूछा।

"बहुत से" अम्मा ने जवाब दिया।

"कितने?" नन्हे उल्लू ने आसमान की ओर देखते हुए पूछा।

उसकी अम्मा मुस्कुराने लगी, "तुम गिनकर देख लो।"

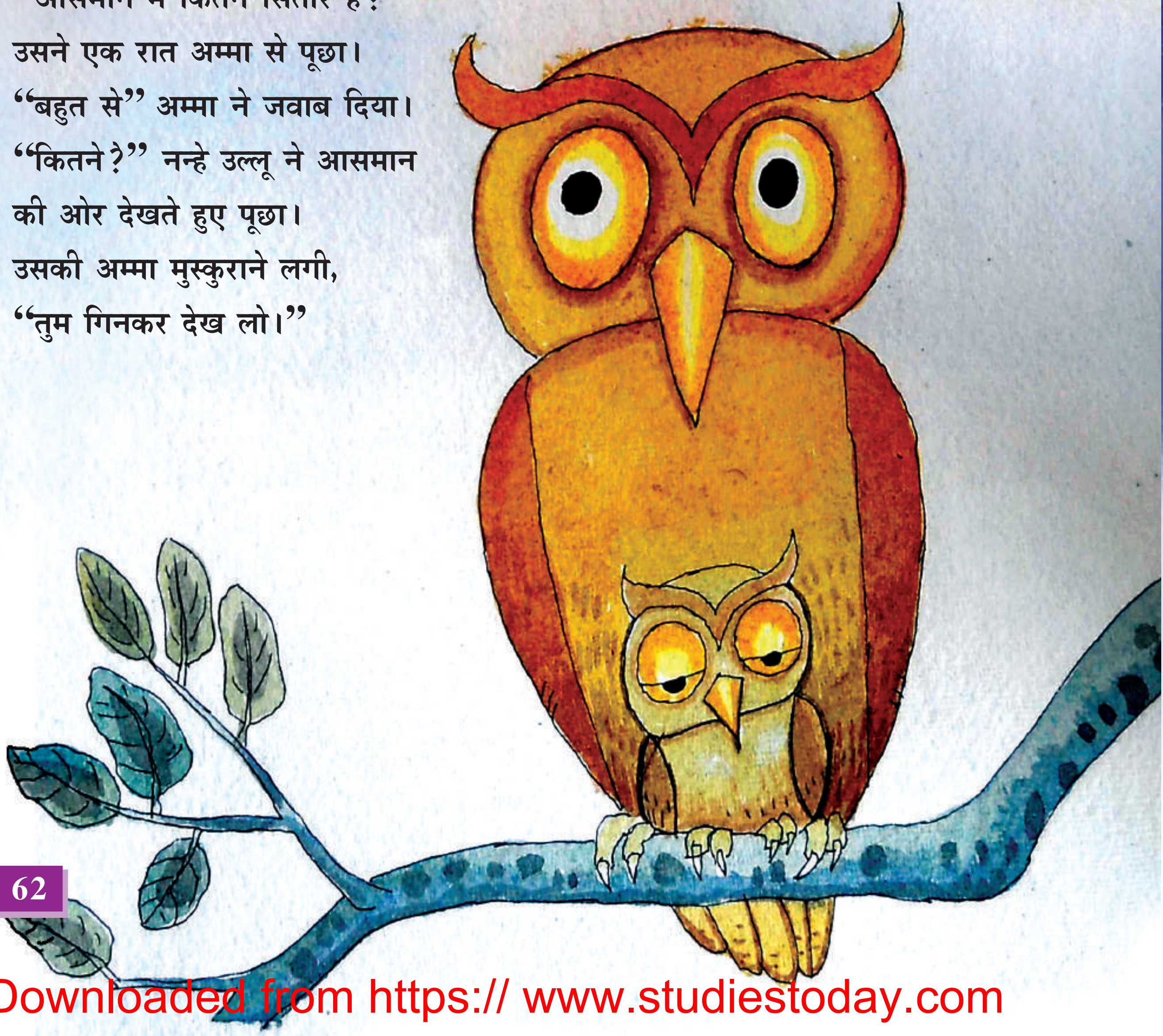

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

"एक, दो, तीन, चार, ...
एक सौ एक, एक सौ दो, ..."
जब सूरज निकला, नन्हा उल्लू तब भी गिन रहा था।
"एक हज़ार एक, एक हज़ार दो, ..."
"कितने सितारे हैं, आसमान में?" अम्मा ने नन्हे उल्लू से पूछा।
"इतने कि मैं गिन भी नहीं सकता।"
नन्हे उल्लू ने पलकें झपकाते हुए कहा और अपना सिर पंखों में छिपाकर झट से सो गया।
अगली रात नन्हे उल्लू ने एक बार फिर आसमान की ओर देखा।
"अम्मा, आसमान कितना ऊँचा है?"
"बहुत ऊँचा।"

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

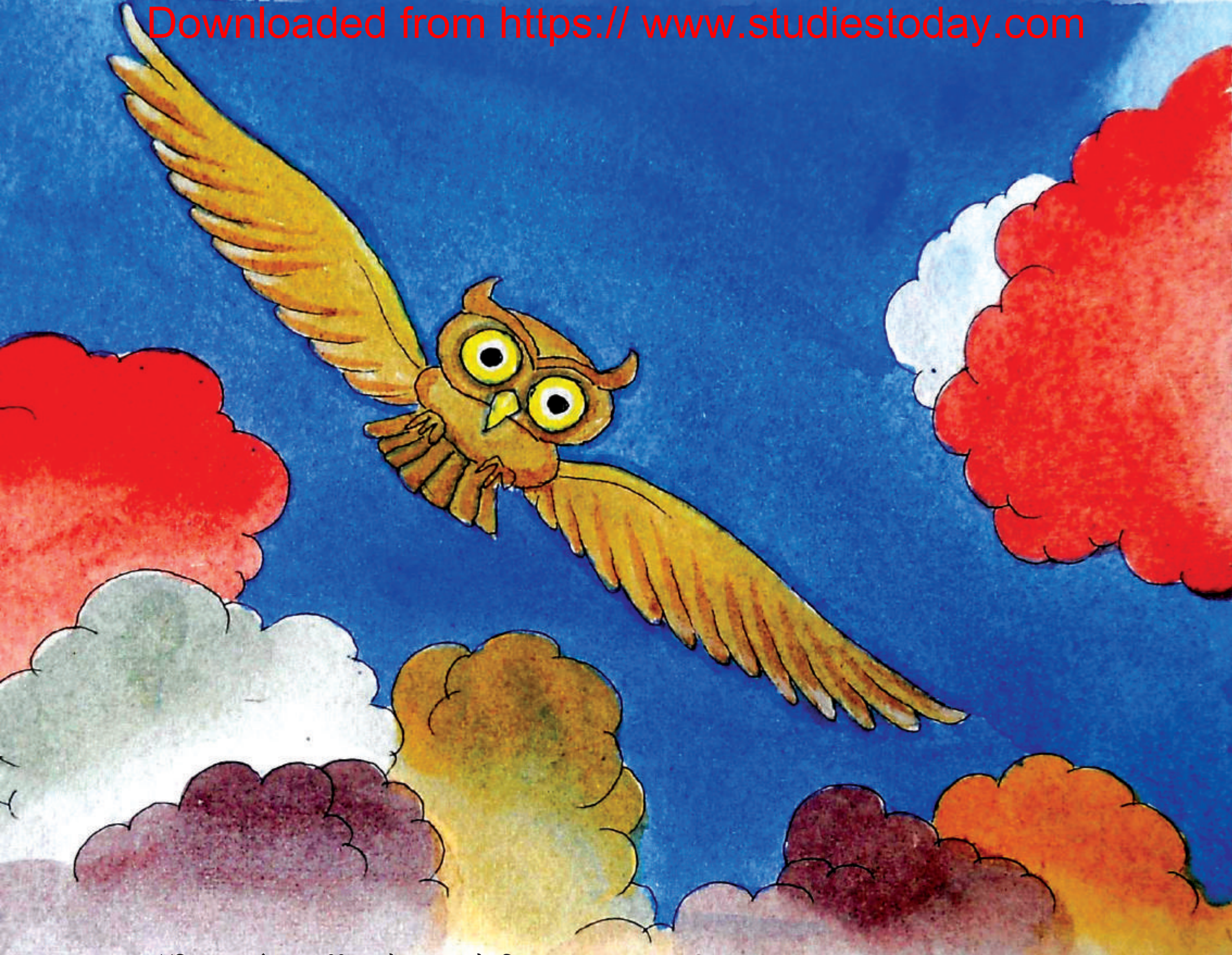

"कितना ऊँचा?" नन्हे उल्लू ने फिर पूछा।
"जाओ, जाकर देख लो।" अम्मा ने कहा।
तो, नन्हा उल्लू ऊपर आसमान में उड़ा।
अपने पेड़ से बहुत ऊपर।
वह बादलों से ऊपर उड़ रहा था।
लेकिन वह जितना ऊपर जाता, आसमान और भी ऊपर चला जाता।
"तो, कितना ऊँचा है आसमान?" अम्मा ने पूछा।
"इतना ऊँचा कि मैं उड़कर पहुँच ही नहीं सकता।" नन्हे उल्लू ने जवाब दिया।
फिर उसने अपनी आँखें बंद कीं और झट से सो गया।
अगली रात नन्हे उल्लू ने समुद्र की लहरों की आवाज़ सुनी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

"समुद्र में कितनी लहरें हैं?" उसने अम्मा से पूछा।
"बहुत सी!" अम्मा बोली। "कितनी?" नन्हे उल्लू ने फिर पूछा।
"जाओ, जाकर गिन लो।" अम्मा ने जवाब दिया। नन्हा उल्लू उड़कर
समुद्र के किनारे आ पहुँचा। वह गिनने लगा- "एक, दो, तीन, ...
ग्यारह, बारह, तेरह, ...
एक हज़ार एक, एक हज़ार दो, ..."
और जब सूरज निकला तो उसने देखा कि समुद्र अब भी
लहरों से भरा हुआ था।
वह अम्मा के पास लौट आया।
"तो, कितनी लहरें हैं, समुद्र में?" अम्मा ने पूछा।
"इतनी कि मैं गिन भी नहीं सकता।"
नन्हा उल्लू आँखें मिचमिचाते हुए बोला।

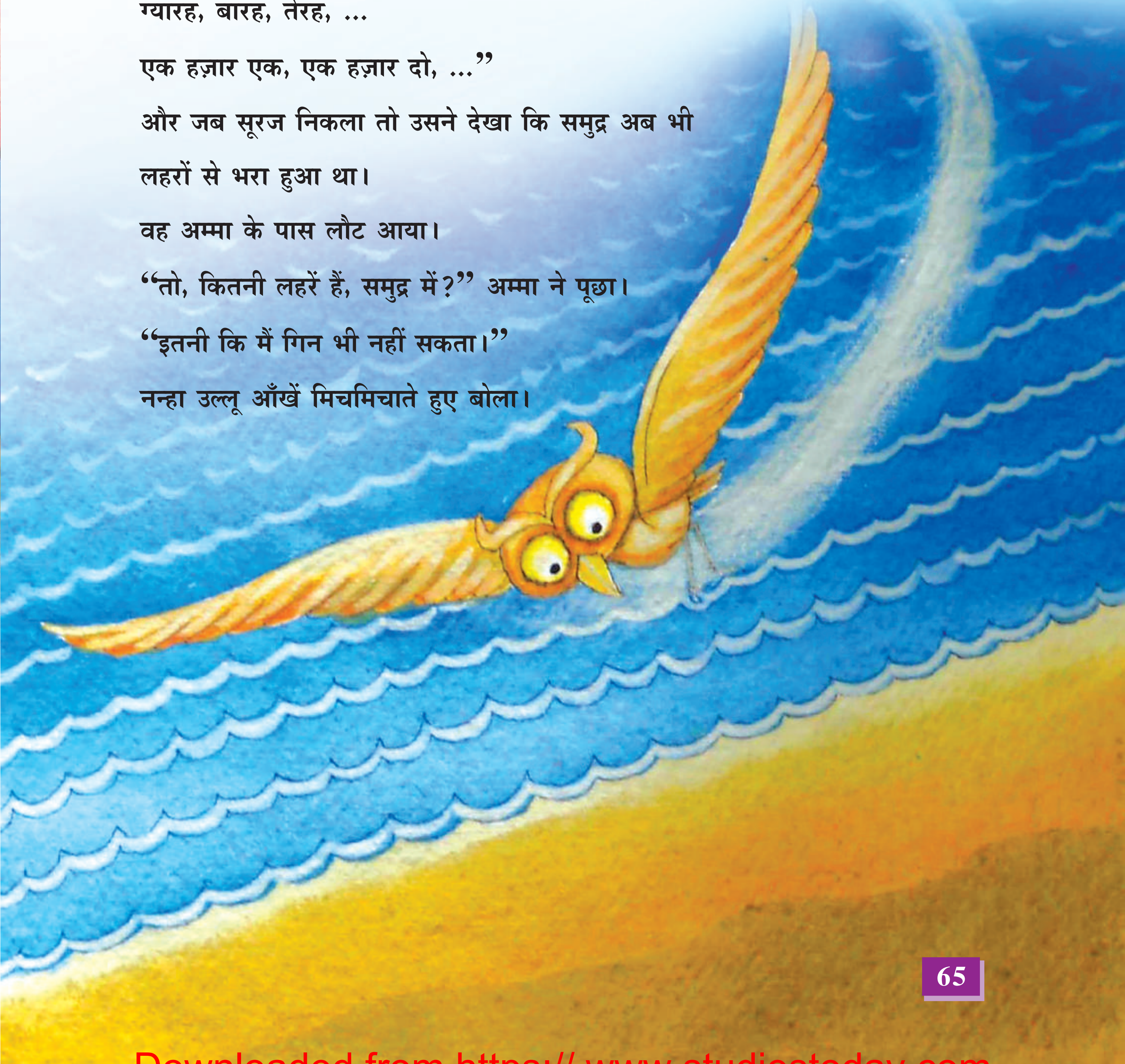

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अगली रात नन्हे उल्लू ने अपनी अम्मा से पूछा- "समुद्र कितना गहरा है?"

"बहुत गहरा," अम्मा बोली।

"कितना गहरा?" नन्हे उल्लू ने पूछा।

अम्मा आसमान की ओर देखने लगी।

"लगभग उतना ही गहरा है, जितना ऊँचा आसमान है।" अम्मा बोली।

नन्हा उल्लू ऊपर देखने लगा।

वह पूरी रात पेड़ पर बैठा रहा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आसमान और सितारों के बारे में सोचता रहा।

समुद्र और लहरों के बारे में सोचता रहा।

जो भी उसने अम्मा से सीखा था, उसके बारे में सोचता रहा।

जैसे ही सूरज निकला नन्हा उल्लू अम्मा की ओर मुड़ा और बोला,

"मैं तुमसे प्यार करता हूँ, अम्मा।"

"कितना?" अम्मा ने पूछा।

"बहुत," नन्हा उल्लू बोला।

नन्हे उल्लू ने एक पल सोचा और अम्मा के गले लग गया।

"आसमान जितना ऊँचा है और समुद्र जितना गहरा,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मैं तुम से उतना प्यार करता हूँ, अम्मा।"

अम्मा ने नन्हे उल्लू को ढाँप लिया।

"तुम कितनी बार गले लगाओगी मुझे?"

नन्हे उल्लू ने पूछा।

"बहुत बार।" अम्मा ने फिर उसे गले से लगा लिया।

"कितनी बार?" नन्हे उल्लू ने ऊँघते हुए पूछा।

"जितनी लहरें हैं समुद्र में, जितने तारे हैं आसमान में,

उतनी बार।"

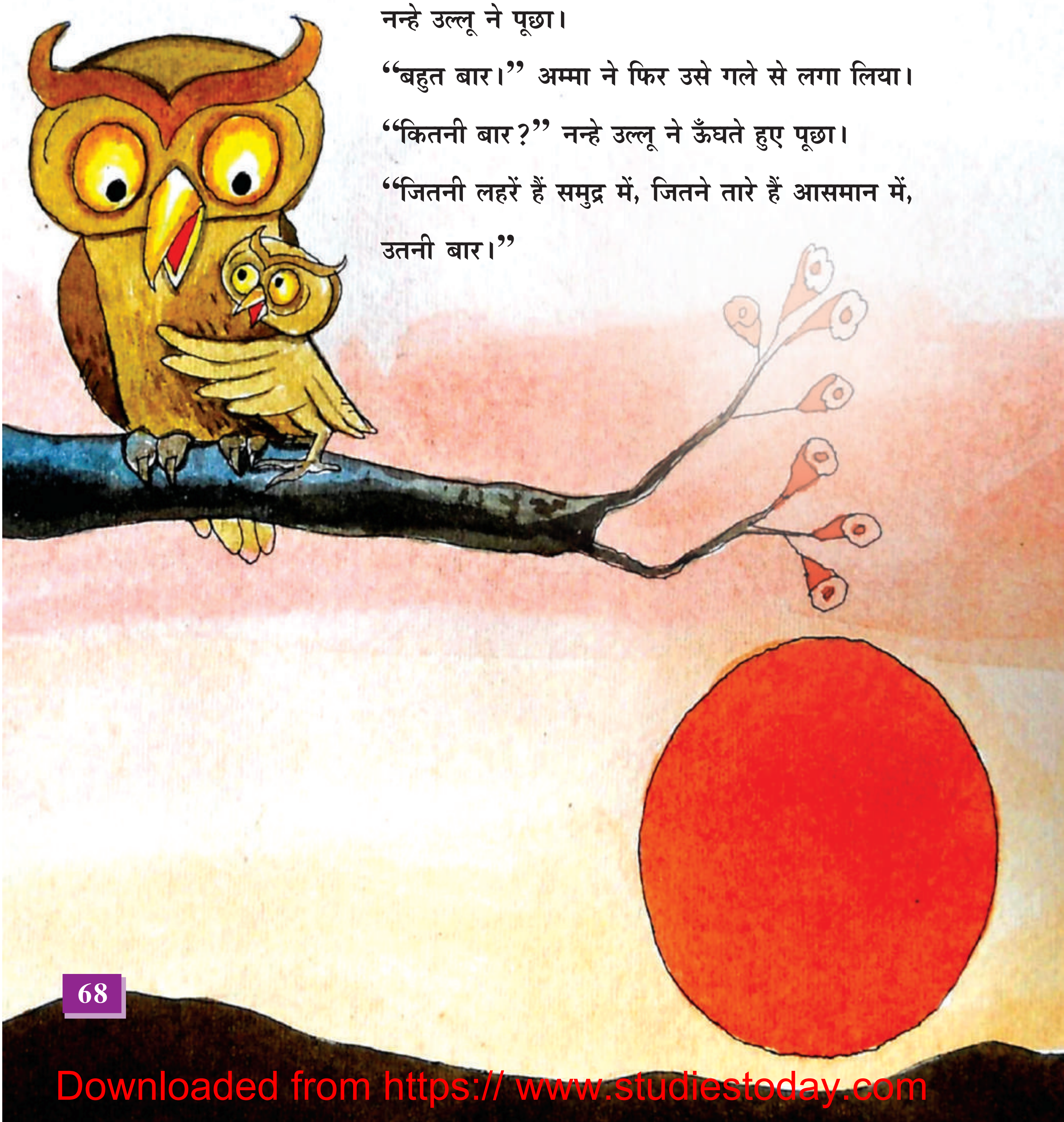

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उल्लू की कहानी पढ़ी। यह प्यार की कहानी है। कैसी लगी?

कहानी वाचन के अनुभव पर लिखें, अपनी डायरी।

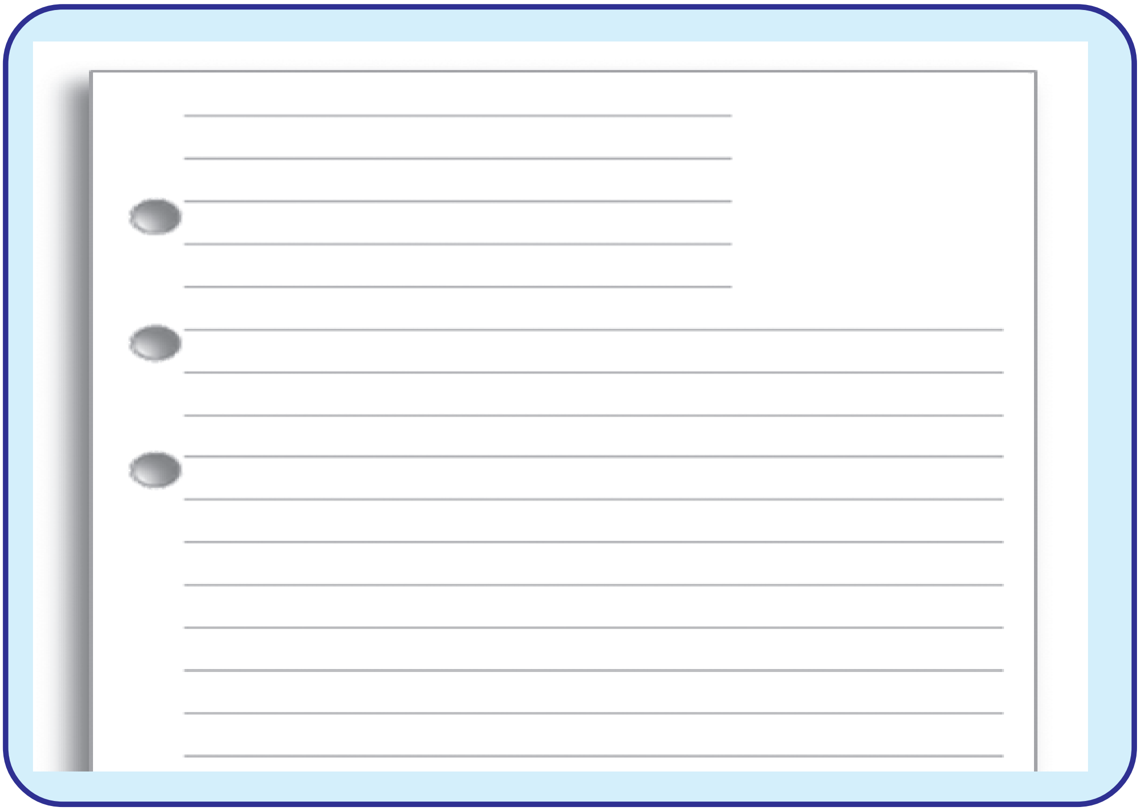

आम पकाएँ...

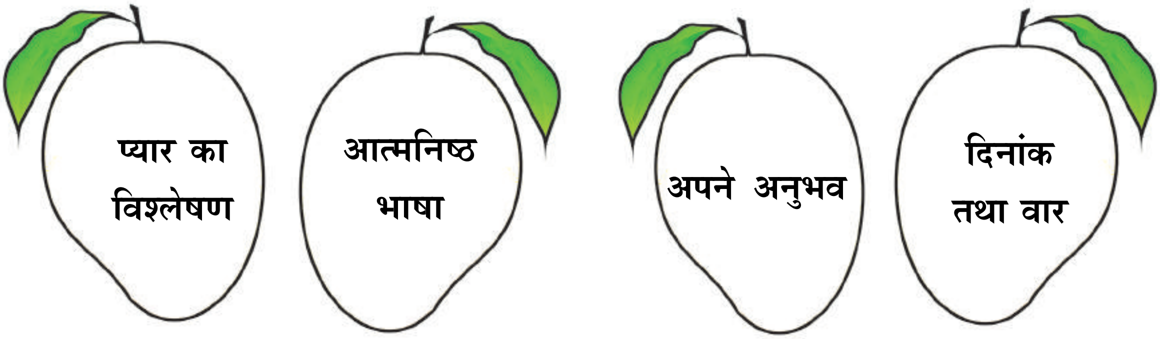

उन आमों को पीला रंग दें, जो अपनी डायरी से संबंध रखते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लिखें।

अम्मा उल्लू	नन्हा उल्लू
मुस्काने लगी	मुस्काने लगा
बोली	....
....	सो गया
लौट आई	....
....	आ पहुँचा
पेड़ पर बैठी	....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

माईक थैलर

लेखक, चित्रकार, अध्यापक, गीतकार, शिल्पी आदि रूपों में मशहूर। आपका जन्म 1936 अक्तूबर 8 को लॉस एंजिलस में हुआ। दि टीचर फ्रम ब्लैक लगून, दि लिटिल लीग फ्रम दि ब्लैक लगून, दि स्नो डे फ्रम दि ब्लैक लगून आदि कई रचनाएँ बच्चो के लिए कीं।

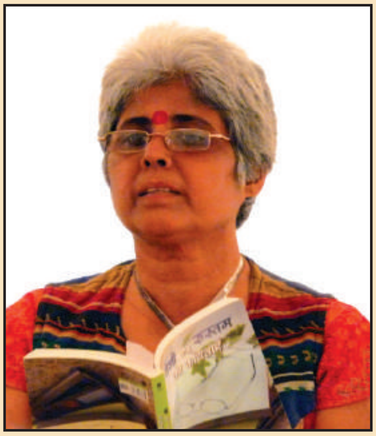

तेजी ग्रोवर (अनुवादक)

हिंदी कवयित्री, चित्रकार, अनुवादक, पर्यावरण कार्यकर्ता आदि के रूप में मश्हूर।आपका जन्म पंजाब के पत्तानकोट में 1955 को हुआ। तेजी और रुस्तम की कविताएँ, मैत्री, लो कहा सांबरी आदि कई किताबें लिखीं। भरत भूषण अगरवाल अवार्ड और दि रासा अवार्ड आदि से सम्मानित।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कविता

बबुआ और बूढ़ा

शेल सिलवरस्टाईन

बबुआ बोला अकसर मेरा
चम्मच मुझसे गिर जाता है।
बूढ़ा बोला जाने भी दो
मुझसे भी यह हो जाता है।

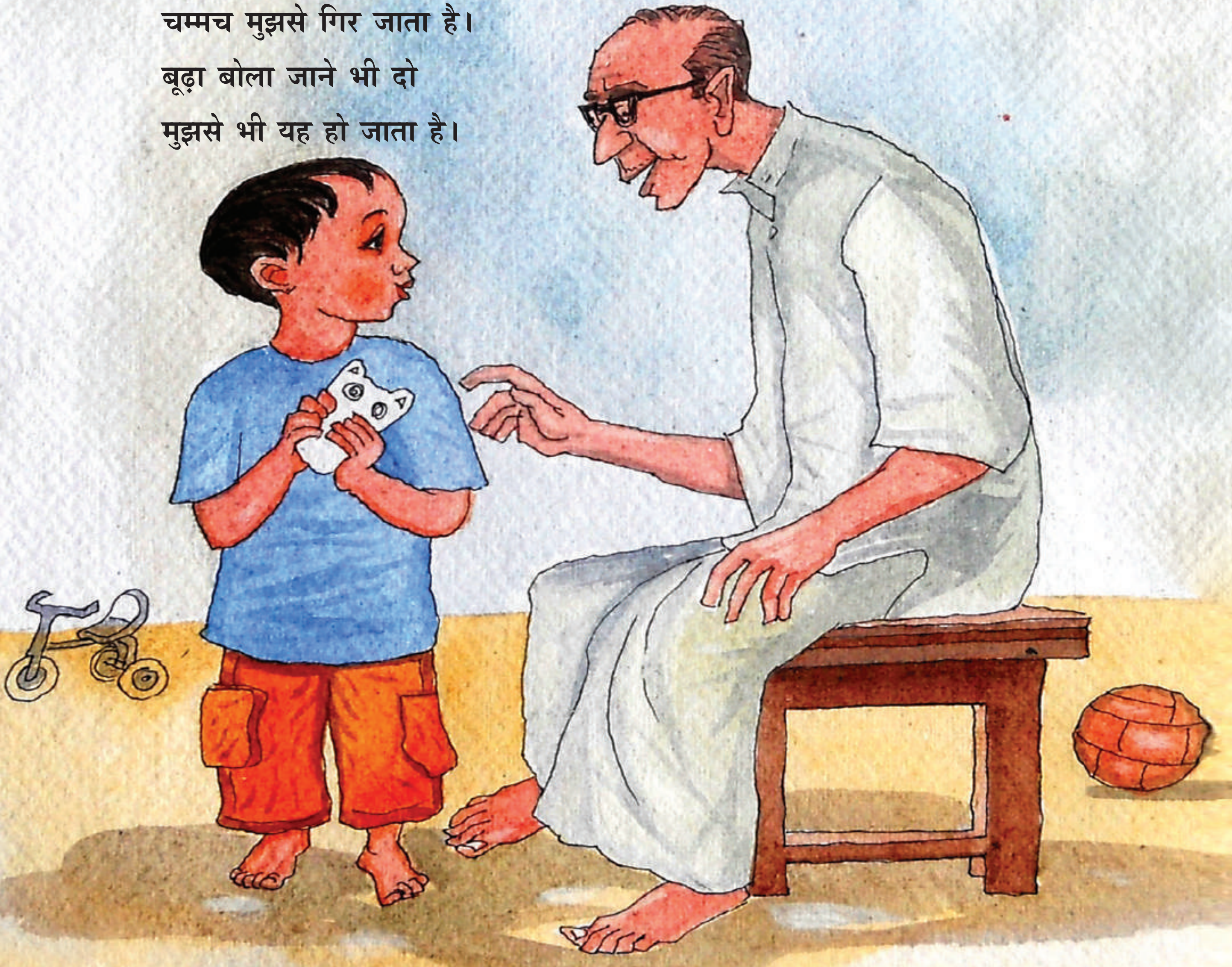

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

बबुआ बोला कभी-कभी तो
कर देता हूँ निक्कर गीली।
हम भी कर देते हैं सू-सू
करनी पड़ती धोती ढ़ीली।

बड़ा रुआँटा बच्चा हूँ मैं,
अब बबुआ ने बात उठाई।
बूढ़ा बोला मैं भी, मैं भी
आती मुझको बहुत रुलाई।

बबुआ बोला बहुत बुरा है,
बड़के हम पर ध्यान न देते।
बूढ़े ने बूढ़े हाथों से
हाथ फिराया बबुआ पर।
समझ रहा हूँ बात तुम्हारी,
मुझे पता है, तुम जो कहते।

बच्चे रोते हैं, बूढ़े भी।
क्या दोनों के रोने का कारण समान है?
विचार करें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ये पंक्तियाँ पढ़ें।

'बबुआ बोला बहुत बुरा है,
बड़के हम पर ध्यान न देते।
बूढ़े ने बूढ़े हाथों से
हाथ फिराया बबुआ पर।
समझ रहा हूँ बात तुम्हारी,
मुझे पता है, तुम जो कहते।'

'बड़के हम पर ध्यान न देते'

इस पर अपना अनुभव लिखें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

देखें, अपना अनुभव कैसा लिखा.....?

उचित खाने पर ✓ करें			
आत्मनिष्ठ भाषा है			
कविता के आशय के आधार पर अपना अनुभव लिखा है			
आकर्षक है			

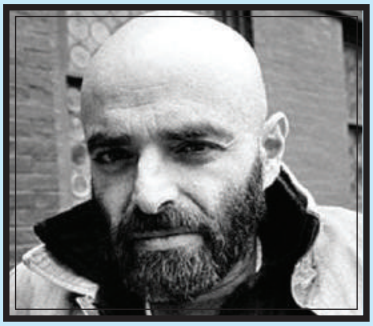

शेल सिलवरस्टाईन

शेलडन अलन सिलवरस्टाईन का जन्म अमरिका के चिकागो में 1930 सितंबर 25 को हुआ। लेखक, कवि, कार्टूणिस्ट, गीतकार, नाटककार आदि रूपों में मशहूर। व्हेर दि साइड व्हाक एंडस्, दि गिविंग ट्री, ए बॉय नैम्ड सू आदि मुख्य रचनाएँ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

खेलें आँख मिचौनी

वर्णों में छिपे शब्द चुन लें और लिखें।

ल	य	व	ग	ह	रा	इ	ध्या
त	सा	भा	कि	तौ	जा	पौ	औ
सू	र	ज	ए	वी	आ	र	हि
पि	न	वा	न	द्र	कै	उ	ल्लू
कु	क्ष	ब	मा	थु	मु	सं	ई
सि	थी	ज	स	ऋ	औ	स	स
ता	अं	ठू	आ	बु	ब	भो	पै
रा	त	ड	पौ	टी	थी	नि	को

....

....

....

....

....

....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मदद लें...

अकसर	മിക്കവാറും பலமுறை ಆಗಾಗ often
आवाज़	ശബ്ദം சத்தம் ಸ್ವರ sound
ऊँचा	ഉയരമുള്ള உயர்ந்த ಎತ್ತರ high
ऊँगते हुए	ഉറക്കം തൂങ്ങി தூங்கி விழுகின்ற ನಿದ್ದೆತೂಗಿ drowsy
गहरा	ആഴമേറിയ ஆழமான ಆಳವಾದ deep
गले लगाया	ആലിംഗനം ചെയ്തു அன்புடன் கட்டியணைத்தல் ಆಲಿಂಗಿಸಿ hugged
गिनकर	എണ്ണിയിട്ട് எண்ணி ಎಣಿಸಿ having counted
गीली	നനഞ്ഞ நனைந்த ಒದ್ದೆಯಾದ wet
चम्मच	കരണ്ടി ஸ்பூண் ಚಮಚ spoon
जवाब	ഉത്തരം பதில் ಉತ್ತರ answer
ढीली	അയവുള്ള தளர்ந்த ಸಡಿಲವಾದ loose
धोती	മുണ്ട് வேஷ்டி ಲುಂಗಿ dhoti
नन्हा	ചെറിയ சிறிய ಸಣ್ಣ tiny
पलकें	കൺപോളകൾ கண்ணிமை ಕಣ್ಣುರೆಪ್ಪೆಗಳು eyelids
पलकें झपकाते हुए	കൺപോളകൾ ചിമ്മിക്കൊണ്ട് கண்ணிமை அசைத்துக்கொண்டு ಕಣ್ಣುಗಳನ್ನು ಮುಚ್ಚಿತೆರೆದು blinking the eyes
पहुँचा	എത്തിച്ചേർന്നു அடைந்த ತಲುಪು reached
पूछना	ചോദിക്കുക கேள்வி கேட்டல் ಕೇಳು to ask
बड़के	മുതിർന്നവർ முதியவர் ಹಿರಿಯರು elders
बबुआ	ആൺകുട്ടി ஆண்குழந்தை ಗಂಡುಮಗು boy
बूढ़ा	വൃദ്ധൻ வயதானவர் ವಯಸ್ಸಾದ ವ್ಯಕ್ತಿ old man
मुड़ा	തിരിഞ്ഞു திரும்பி ತಿರುಗು turned
रुआँटा	रोनेवाला
रुलाई	കരച്ചിൽ அழுகை ಅಳು cry
लौट आया	മടങ്ങിവന്നു திரும்பிவந்த ಹಿಂತಿರುಗಿ ಬರು returned
सवाल	ചോദ്യം கேள்வி ಪ್ರಶ್ನೆ question

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अधिगम उपलब्धियाँ

- चित्र वाचन करके आशय प्रस्तुत करता है।
- कहानी पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- डायरी लिखता है।
- लिंग के अनुसार सही कर्ता क्रिया अन्विति के साथ वाक्य लिखता है।
- अपना किसी अनुभव लिखकर प्रस्तुत करता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

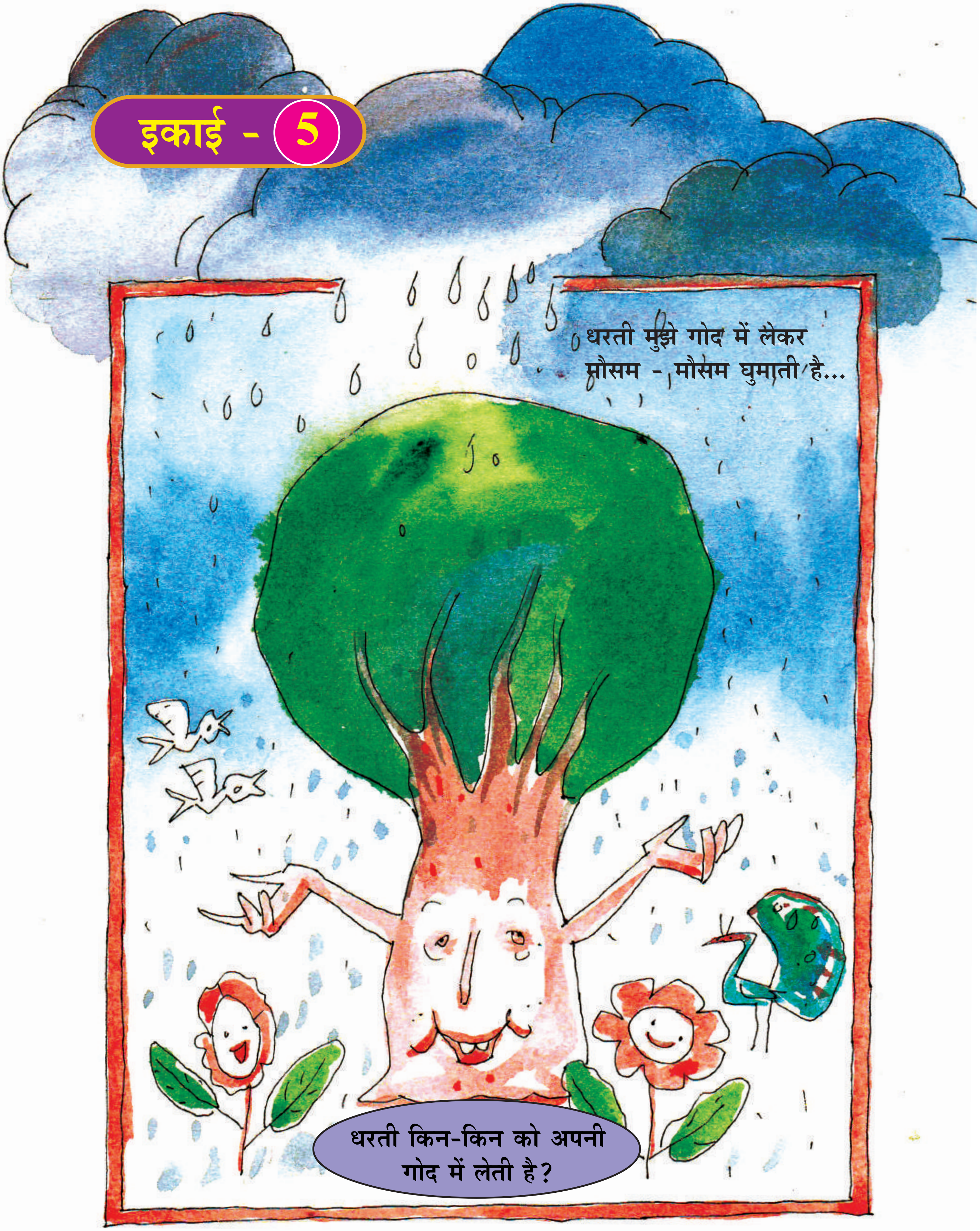

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ज़मीं को जादू आता है।

गुलज़ार

ये मेरे बाग की मिट्‌टी को कुछ तो है।
ये जादुई ज़मीं है क्या?
ज़मीं को जादू आता है।

अगर अमरूद बीजूँ मैं, तो ये अमरूद देती है,
अगर जामुन की गुठली डालूँ, तो जामुन देती है,
करेला तो करेला...नींबू तो नींबू!

अगर मैं फूल माँगू, तो गुलाबी फूल देती है,
मैं जो रंग दूँ उसे, वो रंग देती है।
ये सारे रंग क्या उसने नीचे छुपा रक्खे है मिट्‌टी में?
बहुत खोदा मगर कुछ भी नहीं निकला!
ज़मीं को जादू आता है!

ज़मीं को जादू आता है,
बड़े करतब दिखाती है।
ये लंबे -लंबे ऊँचे ताड़ के जब पेड़,
उँगली पर उठाती है,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तो गिरने भी नहीं देती!
हवाएँ खूब हिलाती है, ज़मीं हिलने नहीं देती!

मेरे हाथों से शर्बत, दूध, पानी
कुछ गिरे सब डीक जाती है
ये कितना पानी पीती है!
गटक जाती है जितना दो।

इसे लोटे से दो या बाल्टी से,
या नल दिन भर खुला रख दो,
गज़ब है पेट भरता ही नहीं इसका
सुना है यह नदी को भी छुपा लेती है अंदर!
ज़मीं को जादू आता है!
ज़मीं के नीचे क्या "चीनी" की खानें हैं?
खटाई की चटानें हैं?
फलों में मीठा कैसे डालती है ये ज़मीं?
लाती कहाँ से है?
अनारों, बैरों और आमों में, सेबों में,
सभी मीठों में भी मीठे अलग हैं,
कि पत्ते खाओ तो फीके हैं और फल मीठे लगते हैं।
मौसंबी मीठी है ते नींबू खट्टा है!
यकीनन जादू आता है!!
वगर न बांस फीका, सख्त, और गन्नों में रस क्यों है?

ज़मीं को जादू आता है।
आपकी क्या राय है?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लिखें

कवि के अनुसार ज़मीं क्या-क्या जादू दिखाती है?

1. अगर मैं अमरूद बीजूँ अमरूद देती है।
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

अपनी ओर से ज़मीं की दो-तीन जादू लिखें।

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कविता का परिचय करते हुए टिप्पणी लिखें

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कितने तारे मेरे हुए...

मिट्टी की खूबी का ज़िक्र है

विषय का उल्लेख

नमूने के साथ बातों का समर्थन किया है

कविता से बाहर, अपनी तरफ से नमूने दिए हैं

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भाषा

प्रस्तुतीकरण

शब्दों का चयन

संक्षिप्तता

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

आकर्षक

शीर्षक

आगे पढ़ने की रुचि पैदा करने लायक

विषयानुकूल

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गुलज़ार

आप का असली नाम संपूर्ण सिंह कालरा है। गीतकार, कहानीकार, कवि, सिनेमा निदेशक, पटकथाकार आदि कई क्षेत्रों में मशहूर। 18 अगस्त 1936 को अविभक्त भारत में पंजाब के झेलम जिले में आप का जन्म हुआ। स्लम डॉग मिलनियर नामक फिल्म के गीत जय हो के लिए 2009 को ऑस्कार पुरस्कार मिला। 2010 का ग्रैमी पुरस्कार, दादा साहेब फाल्के पुरस्कार, पद्मभूषण, साहित्य अकैदमी पुरस्कार आदि से सम्मानित। जंगलनामा, बॉस्की का पंचतंत्र, दायां-बायां, पाजी आदि कई किताबें।

पता

बॉस्कियाना,

पाली हिल,

बांद्रा (पश्चिम)

मुंबई 400050

ई मेल- gulzarpost@gmail.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संस्मरणात्मक लेख

मार्च

सुशील शुक्ल

मार्च के दिनों हाथों में किताबें और आँखों में नींदें रहा करती थीं। दो पन्ने पलटते ही नींद के हाथ आकर आँखों पर पलकें खींच जाते। उन दिनों अकसर ये सोचते कि काश आँखें बंद किए पढ़ाई हो पाती। तब कितना मज़ा आता! सोए-सोए पढ़ते रहते। घंटों पढ़ने में लगे रहते। घरवाले ज़िद करते अब बस करो बहुत पढ़ लिया। बस एक घंटे और पढ़ लें कहकर हम चादर अपने ऊपर खींच लेते। इमतिहान खत्म होते तो नींद भी गायब हो जाती। तब देर रात तक जागा करते। रातों के आसमान तारों से भरे होते और रातों की ज़मीन किस्सों कहानियों से।

मेरे घर के सामने नीम का पेड़ था। उसकी आधी टहनियाँ घर में घुसी चली आती थीं। नीम शरारतन घर की तरफ ज़्यादा फैलता। उसकी गिलहरियाँ और कौए घर में बेहिचक आते-जाते रहते। हमें लगता कि उनका ही तो घर है जिसमें हम रहने चले आए हैं। मार्च में नीम तले बैठ किताब पढ़ते। नीम की कोई पीली पत्ती किताब पर

> काश आँखें बंद किए पढ़ाई हो पाती। तब कितना मज़ा आता!
> इससे कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आ गिरती। मैं पत्ती को देखता रहता। उसके पीले रंग को। कई सवाल मन में आता। क्या पीले रंग के नीचे ज़रूर पत्ती अभी भी हरी होगी? कभी लगता शायद हरा रंग ही पीले में बदल गया है। पत्ती पीली हो गई इसलिए गिरी या उसे गिर जाना है इसलिए पीली हो गई? मार्च की हवाएँ पन्नों के दरवाज़े फड़फड़ा देतीं... हम उन्हें ज़्यादा इंतज़ार न करवाते और पत्ती को उन जल्दबाज़ हवाओं के हवाले कर देते। वे पत्ती को अपनी डाली में टाँककर रफूचक्कर हो जातीं।

मार्च अपने पलाश में गुम यह सब कुछ देखता रहता।

पत्ती पीली हो गई इसलिए गिरी या उसे गिर जाना है इसलिए पीली हो गई?
-इस वाक्य के अर्थ पर चर्चा करें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लिखें...

मार्च के दिनों हाथों में किताबें और आँखों में नींदें रहा करती थीं।....

क्या आपका भी यही हाल है?

क्या अपना अनुभव लेखक के साथ बाँटें?

लिखें लेखक के नाम एक खत।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अनुबद्ध कार्य...

क्या सिर्फ मार्च ही यादगार होता है?
हर महीने का मज़ा हम लूटते हैं, न?
अन्य महीने कैसे गुज़रते हैं?

लिखें एक संस्मरणात्मक लेख।

सुशील शुक्ल

युवा कवि, संपादक, अनुवादक, शैक्षिक कार्यकर्ता आदि के रूप में मशहूर। आपका जन्म 25 मार्च 1974 में मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के गाड़ाघाट नामक गाँव में हुआ था। बच्चों के लिए दस किताबें लिखी है। सौ से अधिक कविताएँ प्रकाशित हुई। बाल विज्ञान पत्रिका *चकमक* के संपादक। एकलव्य शैक्षिक अनुसंधान संस्था के मुख्य कार्यकर्ता।

पता

संपादक, चकमक, ई 10, शंकर नगर, शिवाजी नगर, भोपाल, मध्य प्रदेश-462016

ई-मेल sushilshukla29@gmail.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

धूप की संदूक

वसंत सकरगाए

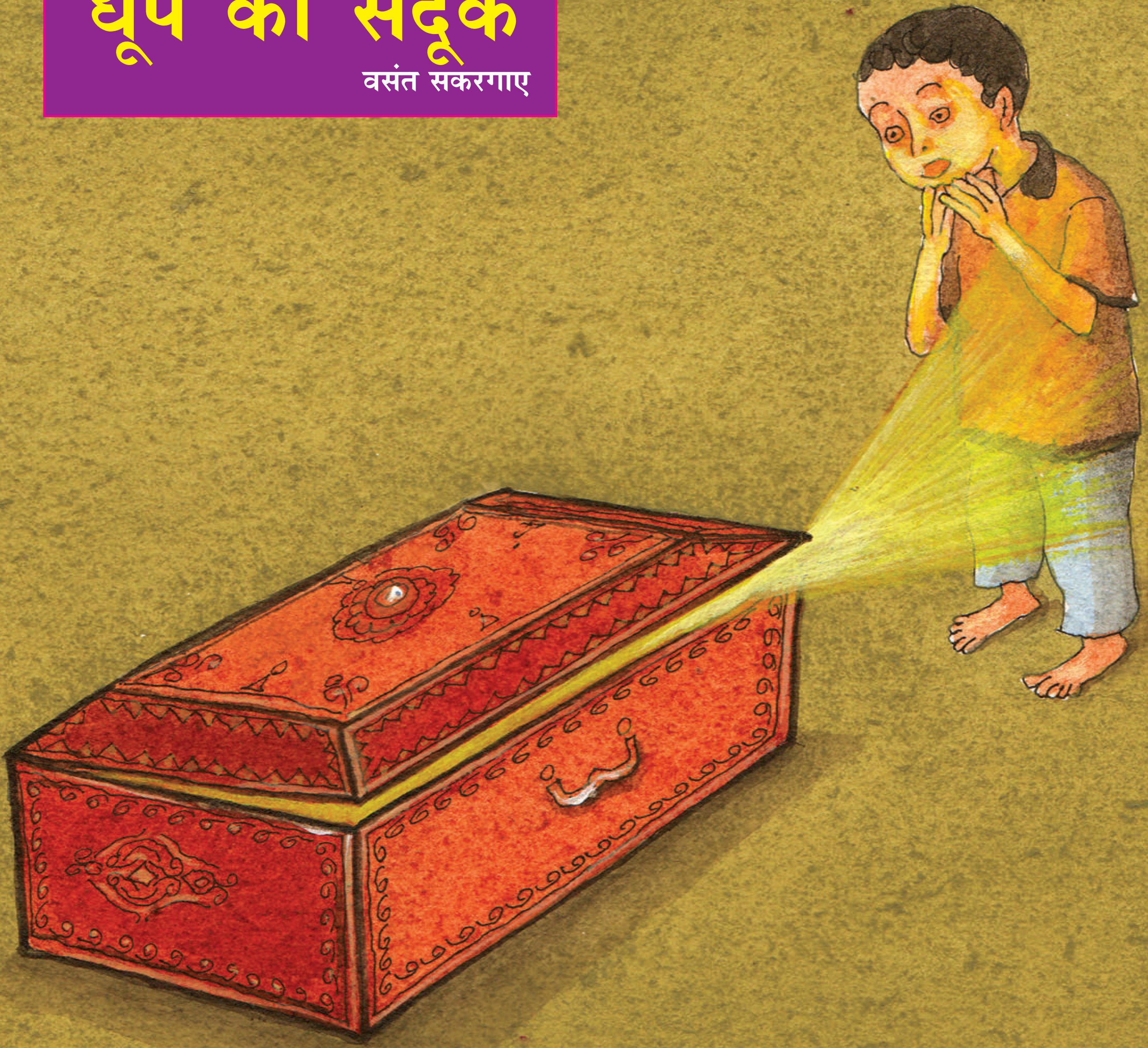

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कविता

बनवा लें सब मिलकर
बड़ी-सी एक संदूक
भर दें सारी उसमें
वैसाख की कसैली धूप
आनेवाले दिनों में देखना
बड़ी काम आएगी यह सूझ।

झम-झमाझम बरसेगा जब पानी
सूरज होगा मेघों में गुम
सुखा देगी सारा का सारा कीचड़
संदूक की यह धूप

जाड़ों में लिए आड़ कोहरे की
सूरज जब भागेगा धरती से दूर,
आँगन में ठिठुरती दादी पर,
उछालेंगे भर-भर मुट्ठी
संदूक की यह धूप।

कविता पाठ करें।

कविता के लिए आस्वादन टिप्पणी तैयार करें।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चढ़ते जाएँ ट्रॉफी जीतें...

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वसंत सकरगाए

हिंदी के युव कवि और नाटककार

वसंत सकरगाए का जन्म 2 फरवरी 1960, वसंत पंचमी के दिन मध्यप्रदेश के खंडवा जिले के हरसूद नामक गाँव में हुआ। नर्मदा बाँध के आने पर हरसूद गाँव डूब गया। आपका साहित्यिक पत्रकारिता में लंबा अनुभव है। वागीश्वरी तथा दुष्यंत पुरस्कार से सम्मानित है। मार के लिए मौसम नहीं, राजेश जोशी-तीन शब्दचित्र, धूप की संदूक आदि आपकी रचनाएँ हैं। निगहबानी में फूल उनका पहला काव्य संग्रह है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मदद लें...

अमरूद	പേരക്ക கொய்யாக்காய் ಪೇರಳೆ gua
आँगन	മുറ്റം வாசல் ಜಗಲಿ courtyard
इंतज़ार	കാത്തിരിപ്പ് காத்திருத்தல் ಕಾಯು wating
इमतिहान	പരീക്ഷ தேர்வு ಪರೀಕ್ಷೆ examination
उछालना	എറിയുക தூக்கிப்போடுதல் ಚಿಮ್ಮು to toss
करतब	പ്രവൃത്തി வேலை ಕೆಲಸ doings
करेला	കയ്പക്ക பாவற்காய் ಹಾಗಲಕಾಯಿ bitterguard
कसेली	ചവർപ്പുള്ള கசப்புள்ள ಕಹಿ bitter
किस्सा	कथा
कीचड़	ചെളി அழுக்கு ಕೆಸರು dirt
कोहरा	മഞ്ഞ് மூடுபனி ಮಂಜು fog
कौआ	കാക്ക காகம் ಕಾಗೆ crow
खत्म	അവസാനിച്ച முடிந்த ಮುಗಿಸು finished
खींचना	വലിക്കുക இழுத்தல் ಎಳೆಯು to drag
खोदा	കുഴിച്ചു தோண்டிய ಅಗೆಯು digged
गटकना	ആഗിരണം ചെയ്യുക உறிஞ்சி எடுத்தல் ಹೀರು gulping a liquid
गायब	അദൃശ്യമായ மறைந்துபோவது ಅದೃಶ್ಯ invisible
गिरती	വീഴുന്ന விழுந்துகொண்டிருக்கும் ಬೀಳು falling
गिलहरी	അണ്ണാൻ அணில் ಅಳಿಲು squirrel
गुठली	ഞാവൽപഴത്തിന്റെ കുരു நாவல் பழத்தின் காய் ನೇರಳೆ ಬೀಜ the stone of a fruit
गुम	അപ്രത്യക്ഷമാകുക மறைந்துபோவது ಅಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವಾಗು to disappear
घुसना	പ്രവേശിക്കുക நுழைதல் ಪ್ರವೇಶಿಸು to enter
चादर	പുതപ്പ് படுக்கை விரிப்பு ಹೊದೆಯುವ ಬಟ್ಟೆ sheet
ज़मीं	ഭൂമി பூமி ಭೂಮಿ earth
जल्दबाज़	ധൃതിയുള്ള விரைவான ಅವಸರವುಳ್ಳ hasty
जादू	ജാലവിദ്യ *மாயாஜாலம்* ಮಾಯಾಜಾಲ magic
जामुन	ഞാവൽപ്പഴം நாவல்பழம் ನೇರಳೆ black plum
ज़्यादा	അധികം அதிகம் ಅಧಿಕ more

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ज़िद	ശാഠ്യം பிடிவாதம் ಹಠ obstinacy
टहनियाँ	ചെറിയ ചുള്ളിക്കമ്പുകൾ *சின்னக்கொம்புகள்* ರೆಂಬೆಗಳು small branches of a tree
टाँकना	തൂക്കിയിടുക தொங்கவிடுதல் ನೇತುಹಾಕು to hang
ठिठुरना	തണുത്തുവിറക്കുക குளிரால் நடுங்குகின்ற ಚಳಿಯಿಂದ ನಡುಗುವ to shiver with cold
डीग जाना	पी जाना
दरवाज़ा	വാതിൽ கதவு ಬಾಗಿಲು door
धूप	വെയിൽ வெயில் ಬಿಸಿಲು
नींबू	നാരങ്ങ எலுமிச்சைபழம் ಲಿಂಬೆ lemon
नींद	ഉറക്കം தூக்கம் ನಿದ್ದೆ sleep
नीम का पेड़	വേപ്പുമരം வேப்பமரம் ಬೇವಿನ ಮರ neem tree
पत्ती	ചെറിയ ഇല சின்ன இலை ಸಣ್ಣ ಎಲೆ leaf
पन्ने	പുസ്തകത്തിന്റെ താളുകൾ புத்தகத்தின் பக்கங்கள் ಪುಟಗಳು pages of a book
पलटते	താളുകൾ മറിയുമ്പോൾ பக்கங்களை புரட்டும்போது ಪುಟಗಳನ್ನು ತಿರುಗಿಸಿದಾಗ turns pages
पलाश	एक पेड़ विशेष जिसके पत्ते सारे मार्च के महीने में गिर जाते हैंऔर फूलों से भरा रहता है
फैलाता	വ്യാപിപ്പിക്കുന്നു பறவுவது ಹರಡು spreading
बाग	ഫലവൃക്ഷത്തോട്ടം பழமுதிர்ச்சோலை ಹಣ್ಣುಗಳ ತೋಟ orchard
बीज	വിത്ത് விதை ಬೀಜ seed
बेहिचक	സങ്കോചം കൂടാതെ கூச்சமில்லாமல் ಸಂಕೋಚವಿಲ್ಲದೆ
मुट्ठी	മുഷ്ടി முஷ்டி ಮುಷ್ಟಿ fist
रफूचक्कर होना	രക്ഷപ്പെടുത്തുക காப்பாத்தல் ರಕ್ಷಿಸು to make good one's escape
लोटा	മൊന്ത செம்பு ಸಣ್ಣ ಪಾತ್ರೆ a small vessel
वैसाख	വൈശാഖ മാസം சித்திரைமாதம் ವೈಶಾಖ the second month of 'saka'calander
शरारतन	കുസൃതിയോടെ குறும்புடன் being wicked
संदूक	പെട്ടി பெட்டி ಪೆಟ್ಟಿಗೆ box
सूझ	ആശയം கருத்து ಆಶಯ idea

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अधिगम उपलब्धियाँ

- चित्रवाचन करके आशय प्रस्तुत करता है।
- कविता पाठ करता है।
- कविता पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- टिप्पणी तैयार करता है।
- संस्मरणात्मक लेख का वाचन करता है।
- लेख पढ़कर आशय प्रस्तुत करता है।
- पत्र लिखता है।
- अनुभवों के आधार पर संस्मरणात्मक लेख लिखता है।
- कविता के लिए आस्वादन टिप्पणी तैयार करता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com